पोल्ट्री मंच

Rs.50/-

25, त्यागराज नगर मार्केट, नई दिल्ली–110003, भारत दूरभाष: 91–783 8602297
E-mail: poultrymanch@gmail.com Website: www.poultrymanch.com

फरवरी 2026 | वर्ष 12 | अंक 2 | 48 पेज कवर सहित

For a nation that aspires to lead the world, a protein-deficient population is a challenge we can no longer ignore.

HELLO PROTEIN is a public awareness nationwide initiative movement born for this urgency. Our mission is simple yet transformative: to reshape India's relationship with protein and to strengthen the industry perspective towards protein awareness.

HELLO PROTEIN purpose is not to preach, but to educate, to simplify complex science, debunk long-held myths, & empower individuals with practical, everyday guidance.

Become an advocate for better nutrition; make protein a priority – not occasionally, but consciously, consistently, and proudly.

Let's join hands & make our nation protein deficit free with **HELLO PROTEIN**.

If this mission resonates with you, do drop your ideas/comments/suggestions at : **helloproteins25@gmail.com**

Mr. O. P. Singh
Founder

POLARIS

Smart Poultry Solutions

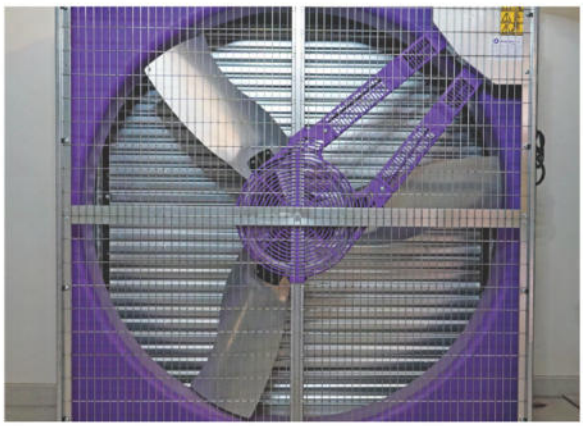

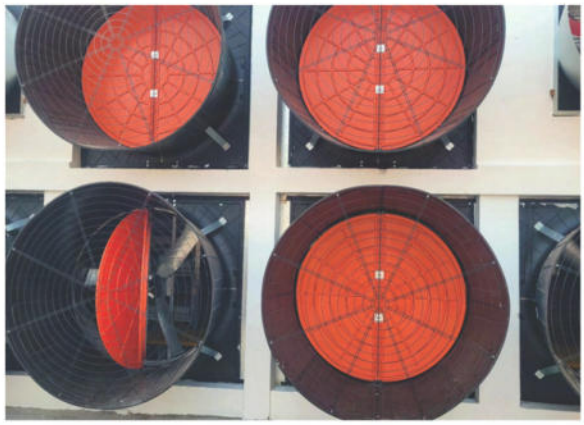

Since 2006, Polaris Equipment Pvt. Ltd. is most preferred brand for poultry equipments for Broiler, Layer and Breeder farm.

Polaris is a sole Distributors of Lubing, vencomatic group, Jamesway chick master and Exafan.

To cater to its already established markets as well as to tap the areas with huge potential, Polaris is looking for financially sound Distributors in Uttar Pradesh, West Bengal, Odisha, Telangana, Madhya Pradesh, Gujarat & Rajasthan.

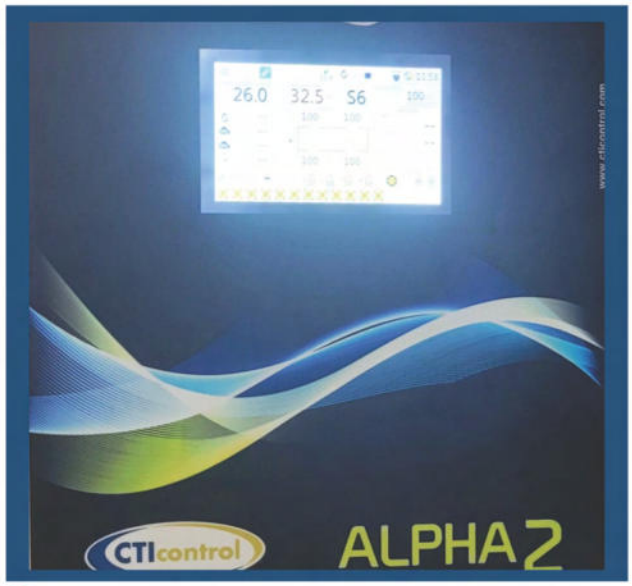

LUBING | Jamesway | Vencomatic Group Agro Supply - Prinzen - Van Gent - Vencomatic | exafan A Whole Farming World inside

Please contact

Polaris Equipment Pvt. Ltd.

+91 9130088083
+91 9970870098

Sales1@polarisequipment.in
sales2@polarisequipment.in

www.polarisequipment.in

विषय सारणी

समाचार

- आईपीईएमए-पोल्ट्री इंडिया टीम का मध्यप्रदेश दौरा 8
- कोरिज़ा वैक्सीन अनुसंधान में हुई प्रगति 13
- Biochem Pharma Reinforces Science-Led 14
- नई दिल्ली में आयोजित डब्ल्यूवीपीए 18
- भुवना न्यूट्रिबियो साइसेज, भारत और एड्रेस 22
- एक्सपैटिका बायोफार्मास्यूटिका प्रा. लि. 26
- नोवस ने वैश्विक सोयाबीन डेटा जारी किया 29
- ऑलटेक दक्षिण एशिया ने पोल्ट्री पोषण 30
- PVS Group Celebrates 33 Years of Leadership 32

लेख

- पोल्ट्री रोग नियंत्रक में नैदानिक तकनीकों 34
- सर्दियों के दौरान अंडे देने वाली मुर्गियों 37
- सर्दियों में मुर्गी पालन कैसे करें 39
- भारत में मुर्गी पालन के स्वास्थ्य और उत्पादन 41
- मुर्गी के पाचन तंत्र को समझना 42
- मुर्गीपालन में टीकाकरण का महत्व 44

adelbert
VEGYSZEREK

(OUR BEST SELLERS)

MINERALS

- ZINC SULPHATE
- ZINC OXIDE
- FERROUS SULPHATE
- MANGANESE SULPHATE
- MANGANESE OXIDE
- COPPER SULPHATE
- COBALT SULPHATE
- CALCIUM IODATE
- SODIUM SELENITE
- COBALT CARBONATE

VITAMINS

- VITAMIN - E
- VITAMIN - A
- VITAMIN -C
- VITAMIN - K
- VITAMIN - B9

BULK PRODUCTS

- DI CALCIUM PHOSPHATE (DCP)
- MONO CALCIUM PHOSPHATE (MCP)
- SODIUM BI CARBONATE (SBC)

AMINO ACID

- DL-METHIONINE
- L-LYSINE HCL
- L-THREONINE
- L-TRYPTOPHAN

ANTIBIOTICS

- ENROFLOXACIN
- FLORFENICOL
- AZITHROMYCIN
- CIPRFLOXACIN
- AMOXICILLIN
- VIRGINIAMYCIN 11%
- TIAMULIN 10, 45, 80%
- TYLOSIN
- IVERMECTIN

+91 9936088329, +91 7398008123
+91 9026713634, +91 7054809008

sales@adelbertvegyszerek.com
www.adelbertvegyszerek.com

पोल्ट्री मंच

(मासिक)

25, त्यागराज नगर मार्केट,
नई दिल्ली–110003, भारत
दूरभाष: 91–7838602297
इ–मेल: poultrymanch@gmail.com
वेबसाईट: www.poultrymanch.com

एक प्रति रू. 50/–
(डाक सहित)

सदस्यता दर

एक साल	रु॰ 500/-
तीन साल	रु॰ 1200/-
पाँच साल	रु॰ 2000/-

संपादक एवं प्रकाशक

अमित राणा

संपादक–मंडल

रिकी थापर	– गुडगाँव
डॉ. संध्या मोरवाल	– CVSA–बीकानेर
RAJUVAS	– बीकानेर (राजस्थान)
डॉ. पंकज शुक्लॉ	– डीयूवीएएसयू, मथुरा
डॉ. एन.के. महाजन	– एलयूवीएएस, हिसार (हरियाणा)
डॉ. राकेश कुमार	– सीएसकेएचपीकेवी, पालमपुर, हि.प्र.
डॉ. मनीष के.आर. सिंह	– पन्तनगर
डॉ. एस.के. शुक्ला	– पन्तनगर, उत्तराखंड
डॉ. सुधांशु शेखर	– कृषि विज्ञान केंद्र, जयनगर, झारखंड
डॉ. श्रीनिवास साथापति	– पन्तनगर
डॉ. सुमन कुमारी जोशी	– एनडीआरआई, हरियाणा
डॉ. संदीप कौशल	– पन्तनगर
डॉ. राजेश कुमार सिंह	– जमशेदपुर
डॉ. शारदा प्रसन्ना साहु	– बरेली, उत्तराखंड
डॉ. अतुल कुमार गुप्ता	– सीएसकेएचपीकेवी, पालमपुर, हि.प्र.
डॉ. अमनदीप सिंह	– लुधियाना, पंजाब
डॉ. आर.एन. त्रिवेदी	– पन्तनगर

विभाग

दृष्टिकोण	5
समाचार अनुभाग	8
विज्ञापनदाता के सूचकांक	46

अमित राणा

दृष्टिकोण

पोल्ट्री की खपत में वर्तमान रुझान

विश्व भर में, विशेषकर भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में, पोल्ट्री की खपत में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है। कभी प्रोटीन के पूरक स्रोत के रूप में माने जाने वाले पोल्ट्री मांस और अंडे अब जीवनशैली में बदलाव, बढ़ती आय, शहरीकरण और पोषण एवं स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण मुख्य आहार का हिस्सा बन गए हैं। सभी पशु प्रोटीन स्रोतों में, पोल्ट्री सबसे किफायती, व्यापक रूप से स्वीकार्य और कुशल विकल्प के रूप में सामने आता है, जिससे यह सभी सामाजिक–आर्थिक वर्गों के उपभोक्ताओं की पसंदीदा पसंद बन गया है।

पोल्ट्री की खपत को प्रभावित करने वाले प्रमुख रुझानों में से एक बढ़ती स्वास्थ्य जागरूकता है। चिकन को उच्च गुणवत्ता वाले, कम वसा वाले प्रोटीन के रूप में व्यापक रूप से पसंद किया जाता है, जबकि अंडे अब संपूर्ण, पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ के रूप में पहचाने जाते हैं। पोषण जागरूकता अभियानों ने पहले की गलत धारणाओं को दूर करने में मदद की है, जिसके परिणामस्वरूप अंडे की खपत में लगातार वृद्धि हुई है।

एक और महत्वपूर्ण बदलाव है साबुत मुर्गियों से प्रसंस्कृत और मूल्यवर्धित पोल्ट्री उत्पादों की ओर रुझान। शहरी और युवा उपभोक्ता कटे हुए टुकड़े, मैरीनेट किए हुए, पकाने के लिए तैयार और खाने के लिए तैयार जैसे सुविधाजनक विकल्पों को तेजी से पसंद कर रहे हैं। क्यूएसआर, फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म और संगठित खुदरा क्षेत्र के विकास ने मांग को और बढ़ावा दिया है, जिससे कोल्ड–चेन इंफ्रास्ट्रक्चर, आधुनिक प्रसंस्करण सुविधाओं और उच्च खाद्य सुरक्षा मानकों में निवेश को प्रोत्साहन मिला है।

मुर्गी पालन के प्रति लोगों की सोच "सस्ते मांस" से बदलकर "स्मार्ट प्रोटीन" की हो रही है। इसकी बेहतर फीड दक्षता, कम कार्बन उत्सर्जन और संसाधनों का कुशल उपयोग इसे अन्य पशुधन की तुलना में प्रोटीन का अधिक टिकाऊ विकल्प बनाता है। जैसे–जैसे उपभोक्ताओं के बीच स्थिरता का महत्व बढ़ता जा रहा है, मुर्गी पालन न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव के साथ भविष्य की प्रोटीन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अच्छी स्थिति में है।

भारत में, बढ़ती आय, बेहतर बाज़ार पहुँच और सरकारी पोषण कार्यक्रमों के समर्थन से ग्रामीण क्षेत्रों में मुर्गी उत्पादों की खपत में आशाजनक वृद्धि देखी जा रही है। अंडे मध्यान्ह भोजन, आंगनवाड़ी पोषण योजनाओं और सार्वजनिक स्वास्थ्य पहलों का अभिन्न अंग बन गए हैं, जो प्रोटीन और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी को दूर करने में उनकी भूमिका को और मजबूत करते हैं। यह संस्थागत मांग न केवल खपत को बढ़ावा दे रही है, बल्कि मुर्गी पालकों के लिए स्थिर बाज़ार भी बना रही है।

डिजिटल प्रभाव और सोशल मीडिया ने भी उपभोक्ताओं की सोच को नया रूप दिया है। फूड ब्लॉगर, पोषण विशेषज्ञ और शेफ़ मुर्गी आधारित व्यंजनों, उच्च प्रोटीन आहार और नवीन खाना पकाने की विधियों को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहे हैं। इससे पारंपरिक व्यंजनों से परे मुर्गी की खपत में विविधता लाने में मदद मिली है, जिससे घरेलू स्तर पर प्रयोग और खपत की आवृत्ति में वृद्धि को प्रोत्साहन मिला है।

हालांकि, इन सकारात्मक रुझानों के साथ–साथ, खाद्य सुरक्षा, ट्रेसबिलिटी और पशु कल्याण के संबंध में उपभोक्ताओं की अपेक्षाएं भी बढ़ रही हैं। आधुनिक उपभोक्ता एंटीबायोटिक–मुक्त उत्पादन, स्वच्छ प्रसंस्करण और पारदर्शी आपूर्ति श्रृंखलाओं की मांग कर रहे हैं। इन चिंताओं का समाधान दीर्घकालिक विकास को बनाए रखने और पोल्ट्री उत्पादों में विश्वास कायम रखने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

निष्कर्षतः, पोल्ट्री उपभोग के रुझान स्पष्ट रूप से स्वस्थ, अधिक सुविधाजनक और टिकाऊ प्रोटीन विकल्पों की ओर बदलाव को दर्शाते हैं। गुणवत्ता, नवाचार और उपभोक्ता जागरूकता पर निरंतर जोर देने के साथ, पोल्ट्री क्षेत्र भारत और विश्व स्तर पर पोषण सुरक्षा और आर्थिक विकास का एक प्रमुख स्तंभ बना रहेगा।

संपादक

पोल्ट्री मंच में प्रकाशित लेख में व्यक्त किए गए विचार लेखक के हैं, यह पत्रिका उसका अनुमोदन नहीं करती – संपादक

ANIMAL FEED SUPPLEMENT

Mineral Covered and Encapsulated

PROMOIS
ПРОМОИС
INTERNATIONAL

AMINO ACID

- DL-Methionine
- L-Lysine Hcl
- L-Threonine
- L-Tryptophan
- L-Valine
- L-Isoleucine

FEED SUPPLEMENT

- Choline Chloride (CCL)
- Liquid 75% /Powder 60%
- Toxin Binder
- Betain Hcl
- Acidifier
- Phytase
- Multienzyme
- Electrolyte
- Glycerine

PROMOIS ANTIBIOTICS

- Chlortetracycline (CTC)
- Tylosin Phosphate 10%
- Tiamulin10,45,80%
- Enrofloxacin
- Florfenicol
- Azithromycin
- Ciprofloxacin
- Amoxicillin
- Virginiamycin 11%
- Ivermectin
- Anticoccidials

BULK PRODUCTS

- Di Calcium Phosphate (DCP)
- Monocalcium Phosphate (MCP)
- Sodium Bicarbonate
- Premix (Layer)
- Premix (Broiler)

VITAMINS

- Vitamin - A
- Vitamin - E
- Vitamin - C
- Vitamin - B1, B2, B9
- Vitamin - K

sales@promoisinternationallt.com
www.promoisinternational.com

Contact us :
What's app:
+91 7054116056
+91 7388158309
+91 9559865338

Amantro Agro

ANIMAL
FEED
SUPPLEMENT

TAILOR MADE
FISH MEAL
SUPPLEMENT

OUR PRODUCT RANGE

- MEAT BONE MEAL SUPPLEMENT
- RICE DDGS SUPPLEMENT
- RAPESEED MEAL SUPPLEMENT
- MEAT MEAL SUPPLEMENT
- BLOOD MEAL SUPPLEMENT
- SOYA LECITHIN SUPPLEMENT
- CHICKEN MEAL SUPPLEMENT

Call : +91 9621510838, +917607596077 , +918853455127

amantroagro017@gmail.com | www.amantroagroproducts.co.in

आईपीईएमए–पोल्ट्री इंडिया टीम

ने मध्य प्रदेश के केसला गांव का दौरा किया,

महिला नेतृत्व वाले लघु कुक्कुट संस्थानों की मजबूती को सुदृढ़ किया

केसला/भोपाल, मध्यप्रदेश, 21–22 जनवरी 2026

आईपीईएमए–पोल्ट्री इंडिया टीम, जिसके अध्यक्ष श्री उदय सिंह ब्यास थे, ने 21 और 22 जनवरी 2026 को मध्यप्रदेश के केसला गांव का दो दिवसीय दौरा किया। इस दौरे में केसला पोल्ट्री सोसाइटी (केपीएस) और मध्यप्रदेश महिला कुक्कुट उत्पादक कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (एमपीडब्ल्यूपीसीएल) के साथ बातचीत की गई। इस दौरे में समावेशी, सामुदायिक स्वामित्व वाले कुक्कुट विकास का एक राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत किया गया, जो जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण को पेशेवर प्रबंधन और औद्योगिक स्तर की दक्षताओं के साथ एकीकृत करता है।

इस बातचीत में सम्मान, आपसी सीख और भारत के कुक्कुट क्षेत्र के सतत और समावेशी विकास के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता जैसे साझा मूल्यों को दर्शाया गया। चर्चाओं में लघु एवं व्यावसायिक मुर्गीपालन उत्पादन के अर्थशास्त्र, महिला नेतृत्व वाली सहकारी संस्थाओं, उत्पादक स्वामित्व वाले उद्यमों के शासन और लघु किसानों को संगठित मुर्गीपालन मूल्य श्रृंखलाओं में प्रभावी ढंग से एकीकृत करने के तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

एक सिद्ध लघु किसान मुर्गीपालन पारिस्थितिकी तंत्र को समझना

केसला पोल्ट्री पहल की शुरुआत 1993 में मध्यप्रदेश के केसला के आदिवासी ब्लॉक में हुई, जहाँ भूमिहीन और सीमांत परिवारों, विशेष रूप से आदिवासी और दलित समुदायों की महिलाओं के लिए आजीविका के साधन के रूप में विकेंद्रीकृत ब्रॉयलर मुर्गी पालन शुरू किया गया था। समय के साथ, यह पहल भारत के सबसे सफल

VITAMINS

- SWISS VITAMIN - A
- SWISS VITAMIN - E
- SWISS VITAMIN - C
- SWISS VITAMIN - K
- SWISS VITAMIN - D2
- SWISS VITAMIN - B2
- SWISS VITAMIN - B9
- SWISS VITAMIN - D3
- SWISS VITAMIN - B5
- SWISS VITAMIN - B1

ANIMAL FEED SUPPLEMENT

SWISS CHEMIE

SWISS
ANTIBIOTICS

- Chlortetracycline 15% (CTC) (BEST SELLER)
- Tiamulin 10/45/80
- Amoxicillin
- Ciprofloxacin
- Doxycycline
- Albendazole
- Fenbendazole
- Lincomycin Hcl
- Azithromycin
- Oxytetracycline
- Enrofloxacin
- Tetracycline Hcl
- Levofloxacin
- Virginiamycin 11%
- Anticoccidials

AMINO ACIDS

- DL-Methionine
- L-Lysine Hcl
- L-Threonine
- L-Tryptophan
- L-Valine
- L-Isoleucine

Contact Us :

What app No.
+91 7380688804, +91 8090693995, +91 7380730134
email : sales@swisschemie.co
Website : www.swisschemie.com

महिला–नेतृत्व वाले पोल्ट्री सहकारी मॉडलों में से एक बन गई, जिसका परिणाम 2006 में मध्यप्रदेश महिला पोल्ट्री उत्पादक कंपनी लिमिटेड (एमपीडब्ल्यूपीसीएल) के गठन के रूप में एक संघबद्ध उत्पादक कंपनी के रूप में सामने आया।

आज, यह मॉडल दर्शाता है कि छोटे पैमाने पर मुर्गी पालन–जब सामूहिक रूप से किया जाता है, पेशेवर रूप से प्रबंधित किया जाता है, और मजबूत पिछड़े और आगे के संबंधों द्वारा समर्थित होता है — बड़े वाणिज्यिक उद्यमों के साथ आर्थिक रूप से प्रतिस्पर्धी हो सकता है, साथ ही दूरगामी सामाजिक और आजीविका प्रभाव भी प्रदान कर सकता है।

एमपीडब्ल्यूपीसीएल का पैमाना, प्रभाव और पिछड़ा एकीकरण

एमपीडब्ल्यूपीसीएल वर्तमान में मध्य प्रदेश के 17 जिलों में कार्यरत है, जिसमें 300 से अधिक गांवों में फैले 17 उत्पादक समूहों में संगठित 9,000 से अधिक महिला पोल्ट्री उत्पादक शामिल हैं। इन संस्थानों ने सामूहिक रूप से ₹455 करोड़ से अधिक का वार्षिक राजस्व अर्जित किया है, जिसमें उत्पादकों की वार्षिक आय ₹20–25 करोड़ से अधिक है, साथ ही 1,000 से अधिक सामुदायिक युवाओं के लिए सम्मानजनक रोजगार भी सृजित किया है।

इस यात्रा के दौरान, आईपीईएमए प्रतिनिधिमंडल को एमपीडब्ल्यूपीसीएल के एकीकृत संचालन का गहन अवलोकन कराया गया। इसका नेतृत्व एमपीडब्ल्यूपीसीएल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री दीपक तुशीर ने किया, जिन्होंने टीम को उद्यम की मूल्य श्रृंखला, संस्थागत संरचना और परिचालन प्रणालियों के बारे में जानकारी दी। प्रतिनिधिमंडल को एमपीडब्ल्यूपीसीएल के मुख्य परिचालन अधिकारी मृदु पवन हजारिका द्वारा साझा किए गए व्यापक ज्ञान से भी लाभ हुआ,

Gallinase™
Innovation Elevates Food Safety

THE KEY TO SAFETY
IS IN OUR HANDS -
MAKE SAFETY
A REALITY
AND DON'T
BE A FATALITY.

Early Stage & Gut Health
Growth & Development
Health & Safety

PRIORITY PREMIUM PROVEN

ABTL
info@abtl.in +91 20 2729 1020 / 21 www.abtlenzymes.com

जिन्होंने लघु मुर्गीपालन के अर्थशास्त्र, सहकारी शासन, जोखिम प्रबंधन और सामाजिक प्रभाव तथा व्यावसायिक व्यवहार्यता के बीच संतुलन पर अंतर्दृष्टि प्रदान की।

प्रतिनिधिमंडल ने इटारसी के किरतपुर औद्योगिक क्षेत्र में स्थित एमपीडब्ल्यूपीसीएल के आधुनिक, पूर्णतः स्वचालित पेलेट फीड निर्माण संयंत्र का भी दौरा किया, जिसकी स्थापना 2018 में हुई थी। वर्तमान में 200–250 मीट्रिक टन प्रतिदिन की उत्पादन क्षमता के साथ, यह संयंत्र 9,000 से अधिक महिला उत्पादकों के लिए लगातार उच्च गुणवत्ता वाले चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करता है और महिला नेतृत्व वाली मुर्गीपालन मूल्य श्रृंखला में उत्पादकता, लागत दक्षता और लचीलेपन को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आईपीईएमए का दृष्टिकोण और आगे की राह

इंडियन पोल्ट्री साइंस एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. पी. के. शुक्ला के मार्गदर्शन से यह दौरा और भी समृद्ध हुआ, जिनके दृष्टिकोण ने केसला लघु–किसान पोल्ट्री मॉडल की वैज्ञानिक, संस्थागत और आर्थिक मजबूती को और पुष्ट किया।

आईपीईएमए–पोल्ट्री इंडिया की ओर से बोलते हुए अध्यक्ष श्री उदय सिंह ब्यास ने कहा कि केसला–एमपीडब्ल्यूपीसीएल का अनुभव इस बात का जीता–जागता

उदाहरण है कि कैसे पेशेवर रूप से प्रबंधित, महिलाओं के नेतृत्व वाली लघु मुर्गीपालन प्रणालियाँ वाणिज्यिक मुर्गीपालन उद्यमों की पूरक बन सकती हैं और साथ ही गहरा और स्थायी सामाजिक प्रभाव भी डाल सकती हैं।

उन्होंने भारत के मुर्गीपालन क्षेत्र में समावेशी विकास, स्थिरता और लचीलेपन को बढ़ावा देने वाले ऐसे जमीनी संस्थानों का समर्थन करने और सहयोग को मजबूत करने के लिए आईपीईएमए की प्रतिबद्धता को दोहराया।

कोरिज़ा वैक्सीन अनुसंधान

में हुई प्रगति के परिणामस्वरूप C3 स्ट्रेन से संचालित VH–Cor4 टेट्रावैलेंट वैक्सीन का विकास हुआ

संक्रामक कोरिज़ा की समझ और प्रबंधन में हुई प्रगति पर एक तकनीकी संगोष्ठी श्रृंखला का आयोजन वेंट्री बायोलॉजिकल्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा 10 से 14 नवंबर, 2025 तक किया गया। ओडिशा में बालांगीर (10 नवंबर) और बरहामपुर (11 नवंबर) में आयोजित सत्रों का नेतृत्व दक्षिण अफ्रीका के फ्री स्टेट विश्वविद्यालय के विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ प्रोफेसर रॉबर्ट आर. ब्रैग ने किया। दोनों बैठकों का शुभारंभ क्षेत्रीय प्रबंधक श्री सत्यजीत मोहंती के स्वागत भाषण से हुआ, जिसके बाद वार्षिक महाप्रबंधक श्री चिता साहू ने विशिष्ट वक्ता का परिचय दिया। प्रोफेसर ब्रैग ने रोग महामारी विज्ञान, स्ट्रेन भिन्नता, निदान संबंधी प्रगति और प्रभावी टीकाकरण रणनीतियों को कवर करते हुए विस्तृत वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि प्रदान की, जिसमें C3 स्ट्रेन से संचालित VH COR4 वैक्सीन पर विशेष ध्यान दिया गया – जिसे भारत में प्रचलित प्रमुख एविबैक्टीरियम पैरागैलिनारम स्ट्रेन से निपटने के लिए डिज़ाइन किया गया है। सत्रों का संचालन डॉ. संभाजी निम्बालकर (एजीएम) ने किया, जिससे सभी प्रतिभागियों को वैज्ञानिक व्याख्या स्पष्ट रूप से समझ में आई। प्रत्येक कार्यक्रम का समापन श्री सत्यजीत मोहंती के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने साझा किए गए बहुमूल्य विचारों और उपस्थित लोगों की सक्रिय भागीदारी की सराहना की।

हैदराबाद में 13 नवंबर को कार्यक्रम की शुरुआत श्री सुनील शर्मा (एजीएम) के स्वागत भाषण और वक्ता के परिचय से हुई। प्रो. ब्रैग ने भारतीय पोल्ट्री प्रणालियों में जमीनी स्तर की चुनौतियों और संक्रामक कोरिज़ा के प्रभावी प्रबंधन के लिए रणनीतिक दृष्टिकोणों पर केंद्रित एक विस्तृत सत्र प्रस्तुत किया। चर्चा सत्र का संचालन डॉ. प्रकाश रेड्डी (डीजीएम) और डॉ. बाबूराज (डीजीएम) ने किया। इस दौरान डॉ. प्रकाश रेड्डी ने स्थानीय रोग संबंधी मौजूदा मुद्दों पर प्रकाश डाला और बेहतर जमीनी समझ के लिए टीम के सदस्यों के साथ बातचीत की। 14 नवंबर को सिद्दिपेट में हुई बैठक भी इसी तरह आयोजित की गई, जिसकी शुरुआत श्री सुनील शर्मा (एजीएम) के स्वागत भाषण और वक्ता के परिचय से हुई। प्रो. ब्रैग ने रोगजनक गतिशीलता, स्ट्रेन भिन्नता और भारतीय पोल्ट्री फार्मों के लिए उपयुक्त साक्ष्य–आधारित कोरिज़ा नियंत्रण विधियों पर चर्चा की। सत्र का संचालन डॉ. बाबूराज (डीजीएम) ने किया और कार्यक्रम का समापन श्री सुनील शर्मा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। ज्ञान साझा करने की ये पहलें भारतीय पोल्ट्री पेशेवरों को वैश्विक वैज्ञानिक विशेषज्ञता उपलब्ध कराने और जमीनी स्तर पर साक्ष्य–आधारित रोग प्रबंधन को मजबूत करने के लिए वेनवर्ल्ड की प्रतिबद्धता को बल देती हैं।

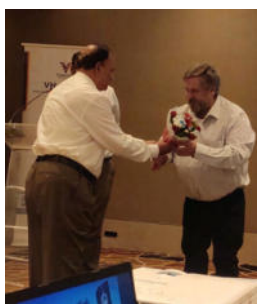

BIOCHEM PHARMA Reinforces Science-Led Leadership At MPSO 2026, Odisha

Odisha: Biochem Pharma marked a strategic and impactful presence at **MPSO 2026**, the flagship Odisha Expo organised by the **Fisheries & Animal Resource Department**, reaffirming its long-term commitment to advancing the **aqua, poultry, and cattle sectors** through science-driven innovation and sustainable solutions.

MPSO 2026 provided Biochem Pharma with a high-value platform to engage with **farmers, dealers, distributors, institutional bodies, and policy-linked stakeholders** from across the state. The company showcased its robust portfolio of **research-backed animal health and nutrition solutions**, designed to enhance productivity, strengthen biosecurity, and support sustainable growth across allied sectors.

A key strategic highlight of the expo was the visit by representatives from the **Odisha Virology Research Institute and the Institute of Medical Science &**

Technology, who interacted with the Biochem Pharma leadership and technical team and expressed strong interest in **Bioguard**, the company's advanced biosecurity solution. The interaction underscored Biochem Pharma's scientific credibility and growing relevance beyond conventional livestock nutrition into **integrated health and preventive solutions**.

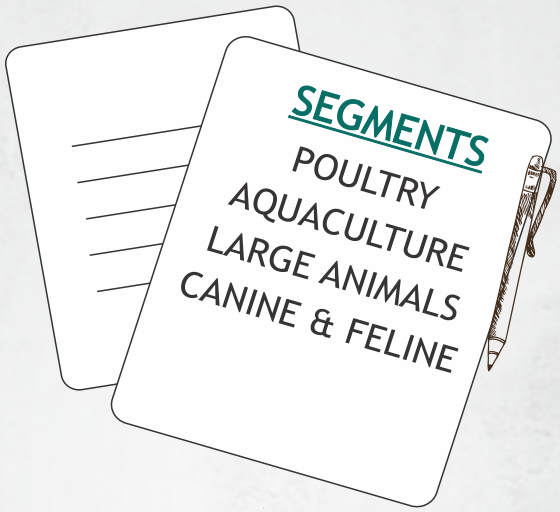

INOVET PHARMA
Human Wellness Through Animal Wellness
One-Stop Manufacturing Hub for Private Label Production
Toxin Binders
Probiotics & Enzymes
Phytogenics
Acidifiers
Multivitamin Combinations
Antioxidents
SEGMENTS
POULTRY
AQUACULTURE
LARGE ANIMALS
CANINE & FELINE
BENEFITS
Sourcing of quality raw materials
QUALITY ASSURANCE
Inhouse quality control
Sourcing of suitable packaging materials
Simple partnership with promising deliveries
Also We Do Customized Formulations As Per Composition And Specifications
INOVET PHARMA
Plot No. 26 / Urban Industrial Park, City Survey Number 146/26, Village : Angam,
Taluka : Umbergaon - 369155, Dist : Valsad. Gujarat. INDIA
+91 - 22 3513 1576/77 | inovetpharma@gmail.com | www.inovetpharma.com

Throughout the expo, Biochem Pharma's engagement strategy focused on **knowledge exchange, solution-oriented discussions, and relationship building**, enabling the company to strengthen existing partnerships while exploring potential institutional collaborations. The strong response and sustained footfall at the Biochem stall reflected the market's confidence in the company's quality standards, innovation capabilities, and customer-centric approach.

Biochem Pharma's participation at MPSO 2026 aligns with its broader vision of building **scalable, science-led partnerships** that support the evolving needs of India's aqua and animal husbandry ecosystem. The event further reinforced the company's position as a **trusted, future-ready organization** committed to delivering long-term value to farmers, trade partners, and institutional stakeholders.

HUVEPHARMA®

Huvepharma® is your chosen partner for sustainable livestock solutions.

Huvepharma N. V.
Uitbreidingstraat 80 2600 Antwerp Belgium
P +32 3 288 1849 F +32 3 289 7845
customerservice@huvepharma.com

Follow us at: huvepharma SEA

www.huvepharma.com

Huvepharma SEA (Pune) Pvt. Ltd.
42, 'Haridwar', Road 2 A/B,
Kalyani Nagar, Pune 411006
P +91 20 2665 4193 F +91 20 2665 5973
salesindia@huvepharma.com

नई दिल्ली में आयोजित

डब्ल्यूवीपीए एशिया सम्मेलन 2026 का शुभारंभ सम्मेलन

सुरक्षित/स्वस्थ विश्व के लिए कुक्कुट रोग प्रबंधन में नवाचार

विश्व पशु चिकित्सा कुक्कुट संघ (डब्ल्यूवीपीए) ने डब्ल्यूवीपीए इंडिया और एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड तथा पशुपालन एवं दुधारू पालन विभाग (डीएएचडी), पशुपालन मंत्रालय के ज्ञान साझेदारों के सहयोग से, 9 जनवरी 2026 को नई दिल्ली स्थित एनएएससी कॉम्प्लेक्स में 7वीं डब्ल्यूवीपीए एशिया बैठक की सफल शुरुआत की। आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. एम. एल. जाट की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में विशिष्ट अतिथि डॉ. इंदरजीत सिंह, मानद कुलपति, बीएएसयू और विशेष अतिथि डॉ. प्रवीण मलिक, पशुपालन स्वास्थ्य आयुक्त थे। इस बैठक में 9–10 अक्टूबर 2026 को नई दिल्ली में आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए रणनीतिक दिशा–निर्देश निर्धारित किए गए।

उद्घाटन बैठक में सरकार, शिक्षा जगत, उद्योग, अनुसंधान संगठनों और पेशेवर निकायों के नेताओं और हितधारकों ने एशिया सम्मेलन के लिए प्राथमिकताओं, साझेदारियों और कार्ययोजना पर विचार–विमर्श किया। विचार–विमर्श में रोग से निपटने की तैयारी को मजबूत करना, जैव सुरक्षा, डिजिटल परिवर्तन में तेजी लाना, रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR) से निपटना, पोषण दक्षता में सुधार करना और पूरे एशिया में टिकाऊ और लाभदायक कुक्कुट उत्पादन को बढ़ावा देना शामिल था।

मुख्य बिंदु

- डॉ. अजीत एस. रानाडे ने उद्घाटन भाषण दिया और बैठक के एजेंडा और उद्देश्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने पैनल चर्चा का संचालन भी किया।
- डब्ल्यूवीपीए इंडिया के सचिव डॉ. शिरीष निगम ने एशिया के पोल्ट्री ज्ञान नेटवर्क को मजबूत करने में डब्ल्यूवीपीए इंडिया की रणनीतिक भूमिका पर प्रकाश डाला और इस बात पर जोर दिया कि एशिया विश्व के लगभग 50% अंडे और चिकन उत्पादन का उत्पादन करता है और भविष्य के विकास के लिए समन्वित क्षेत्रीय सहयोग आवश्यक है।
- डब्ल्यूवीपीए इंडिया के अध्यक्ष डॉ. जीतेंद्र वर्मा ने 7वीं डब्ल्यूवीपीए एशिया बैठक (9–10 अक्टूबर 2026) के लिए डब्ल्यूवीपीए इंडिया की कार्य योजना और रोडमैप की रूपरेखा प्रस्तुत की और उपस्थित लोगों को प्रस्तावित कार्यक्रम संरचना और तैयारी संबंधी महत्वपूर्ण चरणों के बारे में जानकारी दी।
- श्रीनिवासा ग्रुप के प्रबंध निदेशक श्री सुरेश चित्तूरी ने (मुख्य भाषण में) पोल्ट्री उत्पादन में भारत की तीव्र विकास गति पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि भारत वर्तमान में प्रतिवर्ष लगभग 149 अरब अंडे का उत्पादन करता है, प्रति व्यक्ति अंडे की खपत 106 अंडे प्रति वर्ष है और अनुमान है कि आने वाले वर्षों में अंडे का उत्पादन 200 अरब तक पहुंच सकता है। मुर्गी मांस के बारे में श्री चित्तूरी ने कहा कि भारत विश्व का पांचवां सबसे बड़ा उत्पादक है, जहां प्रति व्यक्ति मुर्गी की खपत लगभग 7.5 किलोग्राम प्रति वर्ष है और इस क्षेत्र में 8–10% की वार्षिक वृद्धि की उम्मीद है।
- भारत सरकार के पशुपालन आयुक्त (एएचसी), डीएएचडी, डॉ. प्रवीण मलिक (एग्रीइनोवेट इंडिया लिमिटेड के सीईओ) ने उद्योग जगत के हितधारकों से मुर्गी पालन क्षेत्र को मजबूत करने के लिए व्यावहारिक मुद्दों और सुझावों को सामने लाने का आग्रह किया और सहयोगात्मक पहलों के लिए पशुपालन विभाग के समर्थन की पुष्टि की।
- कार्यक्रम में डब्ल्यूवीपीए के वैश्विक अध्यक्ष प्रो. डॉ. शाक का एक विशेष ऑनलाइन

DHUMAL
DHUMAL INDUSTRIES

Poultry Simplified

धूमल ने उन्नत जीवाणु-रोधी प्लास्टिक विभाजन पेश किए
मुर्गीपालन में ऊर्ध्वाधर खेती के लिए

- 1% तक टूट-फूट के साथ अधिक स्वच्छ अंडे
- मज़दूरों के लिए आसान संचालन और फ़ार्म पर अधिक सुचारु हैंडलिंग
- बेहतर जैव-सुरक्षा के लिए फ्लेम क्लीनिंग

धुमाल इंडस्ट्रीज इंडिया प्रा. लि.
गट नं. 157बी, 2+3, पेठ रोड, रामशेज, पोस्ट - आशेवाड़ी,
ताल - डिंडोरी, नासिक - 422003, (एमएच)
फ़ोन: +91 78878 66084 +91 253 2350384/2350684

Scan to know More

नासिक : +91 9657003684 | पुणे : +91 9970100290 | हैदराबाद : +91 9970100288 | बेंगलुरु : +91 9972578084 |
कोलकाता : +91 9903910984 | आनंद : +91 7028152484 | अंबाला : +91 7773927 484 | लखनऊ : +91 7219130084 |
वेल्लोर : +91 9443162398 | हुबली : +91 8983431884 | भुवनेश्वर : +91 9028887884 | भिलाई : +91 9713111666 |
पल्लादम : +91 9443162398 | हाजीपुर : +91 9684704032 | विजयवाड़ा : +91 9028884284

www.dhumal.com | sales@dhumal.com

संबोधन शामिल था, जिसमें उन्होंने डब्ल्यूवीपीए की अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों और मुर्गी पालन स्वास्थ्य पेशेवरों के बीच वैश्विक आदान–प्रदान को बढ़ावा देने में एसोसिएशन की भूमिका पर प्रकाश डाला।

- विशिष्ट अतिथि, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के मानद कुलपति डॉ. इंदरजीत सिंह ने उद्योग नेतृत्व वाले अनुसंधान और मजबूत उद्योग–अकादमिक साझेदारी पर जोर दिया और ग्रामीण और घरेलू मुर्गी पालन प्रणालियों का समर्थन करने वाली पहलों का आह्वान किया।
- आईसीएआर के नेतृत्व से उच्च स्तरीय भागीदारी और सक्रिय योगदान में डॉ. एम. एल. जाट (डीजी, आईसीएआर), डॉ. दिवाकर हेमाद्री (एडीजी स्वास्थ्य) और डॉ. ए. के. सामंता (एडीजी, पोषण) शामिल थे, जिन्होंने एशिया बैठक के लिए समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करने का वादा किया। महानिदेशक ने मुर्गी पालन उद्योग को आश्वासन दिया कि आने वाले दिनों में मुर्गी पालकों के लिए मक्के की कोई कमी नहीं होगी।

नेतृत्व पैनल चर्चा

बैठक का समापन "भारत के पोल्ट्री नेतृत्व से एशिया की अपेक्षाएं" विषय पर एक नेतृत्व पैनल चर्चा के साथ हुआ, जिसमें पोल्ट्री उद्योग संगठनों और संघों, प्रमुख एकीकरणकर्ताओं, पशु स्वास्थ्य और चारा कंपनियों, तथा अकादमिक और अनुसंधान विशेषज्ञों के प्रतिनिधि शामिल थे। पैनल में श्री रणपाल ढांडा, अध्यक्ष, पीएफआई, डॉ. यश गोयल, एमडी एमएसडी, श्री विजय तेंग, अध्यक्ष, INTAS, श्री उदय सिंह ब्यास, अध्यक्ष, पोल्ट्री इंडिया, डॉ. अरुण अत्रे, सीईओ, ज़ेनेक्स एएच, डॉ. संजय गावकारे, जीएम, वेंकीज़, डॉ. सीबी पाठक, वीपी, डॉ. अली असगर, एमडी, सैफ

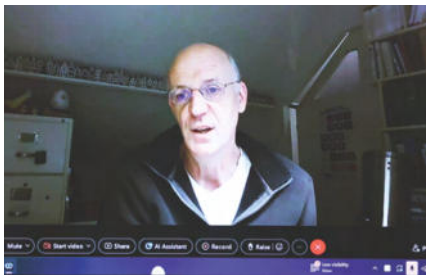

वेटमेड, डॉ. लीना बोरा वामसो, डॉ. एनके महाजन, श्री मोहित मलिक, श्री एसके मल्होत्रा, डॉ. दिवाकर हेमाद्री एडीजी आईसीएआर, डॉ. एके सामंता एडीजी आईसीएआर, मेजर जनरल एमएल शर्मा, महासचिव एनएवीएस शामिल थे। पैनल ने क्षेत्रीय अपेक्षाओं, सार्वजनिक–निजी सहयोग के संभावित रास्तों, छात्रों की सहभागिता और क्षमता निर्माण, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और सीमा पार रोगों और रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी के खिलाफ तैयारियों को मजबूत करने के उपायों पर चर्चा की।

सत्र के दौरान घोषित उल्लेखनीय प्रतिबद्धताओं में पशु चिकित्सा छात्रों और उभरते पेशेवरों की उपस्थिति को बढ़ावा देने और उन्हें प्रायोजित करने के लिए उद्योग संघों का समर्थन शामिल था।

समापन

इस प्रारंभिक बैठक में भारत की इस तत्परता की पुष्टि हुई कि वह एशिया भर में कुक्कुट स्वास्थ्य और उत्पादन में विज्ञान, नीति और उद्योग प्रथाओं को बढ़ावा देने वाले एक समावेशी और उच्च प्रभाव वाले अंतर्राष्ट्रीय मंच की मेजबानी करने के लिए तैयार है। आयोजकों ने सभी प्रतिभागियों, वक्ताओं और सहयोगी संगठनों के सक्रिय योगदान के लिए आभार व्यक्त किया। बैठक का समापन डॉ. बी. बर्मन के औपचारिक धन्यवाद भाषण के साथ हुआ।

डब्ल्यूवीपीए और डब्ल्यूवीपीए इंडिया के बारे में

विश्व पशु चिकित्सा कुक्कुट संघ (डब्ल्यूवीपीए) 1959 में स्थापित एक वैश्विक पेशेवर संस्था है जो शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, सरकार और उद्योग जगत के पशु चिकित्सकों और पक्षी स्वास्थ्य पेशेवरों को एक साथ लाती है। वर्तमान में डब्ल्यूवीपीए की कई देशों में शाखाएं हैं और यह कुक्कुट स्वास्थ्य और उत्पादन में वैज्ञानिक आदान–प्रदान और सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए काम करती है। डब्ल्यूवीपीए इंडिया क्षेत्रीय सहयोग को सुगम बनाने वाली राष्ट्रीय शाखा है और डब्ल्यूवीपीए एशिया का संगठन है।

किसी भी पूछताछ के लिए कृपया डब्ल्यूवीपीए इंडिया या एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड से संपर्क करें।

dr.barman@gmail.com
www.wvpaasiameeting2026.com

भुवना न्यूट्रिबियो साइंसेज

भारत और एंड्रेस पिंटालुबा एस.ए. (एपीएसए), स्पेन

ने रायपुर में भुवना–पिंटालुबा तकनीकी श्रृंखला के अंतर्गत दूसरे तकनीकी सेमिनार का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

भुवना न्यूट्रिबियो साइंसेज, भारत और एंड्रेस पिंटालुबा एस.ए. (एपीएसए), स्पेन ने 15 दिसंबर 2025 को होटल सयाजी में भुवना–पिंटालुबा तकनीकी श्रृंखला के अंतर्गत अपने दूसरे तकनीकी सेमिनार का सफलतापूर्वक आयोजन किया। यह आयोजन पोल्ट्री उद्योग के लिए विज्ञान आधारित, व्यावहारिक समाधानों को बढ़ावा देने के भुवना–पिंटालुबा के निरंतर प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ।

सेमिनार का शुभारंभ गणेश वंदना से हुआ, जिसके बाद भुवना के महाप्रबंधक डॉ. निखिल अदागले ने स्वागत भाषण दिया। अपने भाषण में उन्होंने नवाचार, अनुसंधान और तकनीकी उत्कृष्टता के माध्यम से पोल्ट्री स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए कंपनी की दृढ़ प्रतिबद्धता पर जोर दिया।

मुख्य सत्र का व्याख्यान आनंद कृषि विश्वविद्यालय, आनंद, गुजरात के पशु विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुभवी तकनीकी सलाहकार डॉ. रईस राजपुरा ने दिया। "मुर्गीपालन में आंत और श्वसन स्वास्थ्य के लिए एकीकृत दृष्टिकोण" विषय पर उनकी प्रस्तुति में बहुमूल्य वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक रणनीतियाँ प्रस्तुत की गईं, जिनका उद्देश्य मुर्गियों के प्रदर्शन और समग्र कृषि लाभप्रदता में सुधार करना था।

मुख्य भाषण के बाद, एंड्रेस पिंटालुबा एस.ए. (एपीएसए) की एशिया क्षेत्र प्रबंधक डॉ. ज्योति कुमार मैनाली ने कंपनी की प्रोफ़ाइल का संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने यूरोपीय मूल के टियामुलिन 10% (एपीएसएमिक्स टियामुलिन 10%) और अन्य शोध–आधारित उत्पादों जैसे एपीएसएविट ओवोस्मार्ट, एपीएसए मियोकेम 20 और एपीएसए एमिनोविट पर प्रकाश डाला, जिन्हें मजबूत अनुसंधान एवं विकास क्षमताओं के माध्यम से विकसित किया गया है।

इसके अतिरिक्त, डॉ. निखिल अदागले ने भुवना की यात्रा के बारे में जानकारी साझा करते हुए, आंत स्वास्थ्य प्रबंधन में

संगठन की प्रमुख शक्तियों को रेखांकित किया और पोल्ट्री स्वास्थ्य संबंधी गंभीर चुनौतियों के समाधान के लिए डिज़ाइन किए गए अभिनव टैबलेट–आधारित समाधानों (गटप्रॉप डब्ल्यूएस) का प्रदर्शन किया।

इस सेमिनार में छत्तीसगढ़ और ओडिशा के प्रमुख पोल्ट्री हितधारकों और प्रोटीन उत्पादकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। गहन, व्यावहारिक प्रासंगिकता और उद्योग–केंद्रित दृष्टिकोण के लिए संवादात्मक तकनीकी चर्चाओं की बहुत सराहना की गई।

उपस्थित प्रमुख प्रोटीन उत्पादकों में शामिल थे:

श्री एस.एस. ब्राह्मणकर, श्री अचिन बनर्जी, श्री धनराज बनर्जी, श्री मुकेश ब्राह्मणकर, श्री गोविंद चंद्राकर, श्री वीरेंद्र चहल, श्री सचिदानंद मेहर, श्री नलिन मेहर, श्री बिनया मेहर, श्री एच. सूर्यकुमार, श्री यशवन्त चंद्राकर, श्री राजेश चहल, श्री मुहम्मद, डॉ. मनोज शुक्ला, डॉ. अमित यसकल, डॉ. बिजेंद्र साहू, डॉ. श्लोक साहू, श्री गोपाल उग्रा, श्री सुमन मिश्रा, श्री वी. रमना, श्री शिवदेव सिंह कालकट, सहित अन्य सम्मानित प्रोटीन उत्पादक।

इस आयोजन ने भारत के पूर्वी और मध्य क्षेत्रों में नए व्यापार के अवसर खोलते हुए, भुवाना न्यूट्रिबियो साइंसेज इंडिया और एंड्रेस पिंटालुबा एस.ए. (एपीएसए) स्पेन के लिए एक मजबूत ब्रांडिंग और जुड़ाव मंच के रूप में काम किया। भुवना–पिंटालुबा ने विज्ञान आधारित पोल्ट्री समाधान प्रदान करने के अपने मिशन में सक्रिय भागीदारी और निरंतर प्रोत्साहन के लिए सभी भागीदार प्रोटीन उत्पादकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

ROSS 308 AP

PREFERRED CHOICE FOR BROILER INTEGRATORS

BEST
MARKETABLE BIRD
1st Choice for Consumers, Retailers and Traders

EXCELLENT
BROILERS RESULTS
Good Broiler Performance across the year

UNMATCHED
BREEDER PERFORMANCE
More chicks per parent stock

SCAN
to learn more about the Ross 308 AP in India.

Aviagen India
BREEDING SUCCESS TOGETHER

ROSS
An Aviagen Brand

AVIAGEN INDIA POULTRY BREEDING COMPANY PRIVATE LIMITED
+91 74837 21180 • indiasales@aviagen.com • www.aviagen.com

ROSS 308 AP BEST ACHIEVERS DECEMBER-2025

Aviagen INDIA

Northern Region

COMPANY: Sampoorna Feeds
FARMER NAME: Mr. Nirmal Singh

DECEMBER-2025	Top #1
Farm Type	Open House
State	PUNJAB
Chicks Placed	3260
Mean Age	32.0
Avg Body Wt	2386
FCR	1.370
cFCR	1.284
Livability%	96.1
Daily Gain	74.6
EPEF	523.0

Eastern Region

COMPANY: IB Group
FARMER NAME: Ms. Nilima Roy

DECEMBER-2025	Top #1
Farm Type	Open House
State	BENGAL
Chicks Placed	1288
Mean Age	41.0
Avg Body Wt	3084
FCR	1.433
cFCR	1.192
Livability%	95.7
Daily Gain	75.2
EPEF	502.5

Central Region

COMPANY: Japfa
FARMER NAME: Mr. Ankush Baban Jagadale

DECEMBER-2025	Top #1
Farm Type	EC House
State	MAHARASHTRA
Chicks Placed	6788
Mean Age	33.6
Avg Body Wt	2494
FCR	1.386
cFCR	1.276
Livability%	96.3
Daily Gain	74.1
EPEF	515.0

South Region

COMPANY: SKM
FARMER NAME: Ms. Dhivya Ayilam

DECEMBER-2025	Top #1
Farm Type	EC House
State	TAMILNADU
Chicks Placed	22490
Mean Age	32.2
Avg Body Wt	2210.0
FCR	1.340
cFCR	1.293
Livability%	97.1
Daily Gain	68.6
EPEF	497.3

DECEMBER-Top PERFORMANCE BY AREA

Area	Chicks Placed	Mean Age	BW	FCR	cFCR(2Kg)	Livability%	Daygain	EPEF
North EC House	5082	40.0	3147	1.590	1.335	95.8	78.7	474.0
North Open House	3260	32.0	2386	1.370	1.284	96.1	74.6	523.0
East EC House	10991	36.0	2658	1.503	1.357	95.6	73.8	469.8
East Open House	1288	41.0	3084	1.433	1.192	95.7	75.2	502.5
Central EC House	6788	33.6	2494	1.386	1.276	96.3	74.1	515.0
Central Open House	6228	33.1	2418	1.407	1.314	96.5	73.0	501.1
South EC House	22490	32.2	2210	1.340	1.293	97.1	68.6	497.3
South Open House	1860	33.5	2390	1.420	1.333	96.9	71.4	487.3

DECEMBER-Top 10 FIELD PERFORMANCE

Flock	Farm Type	State	Chicks Placed	Mean Age	BW	FCR	cFCR	Livability%	Day Gain	EPEF
Flock 1	OPEN HOUSE	PUNJAB	3260	32.0	2386	1.370	1.284	96.1	74.6	523.0
Flock 2	OPEN HOUSE	PUNJAB	4960	31.6	2334	1.380	1.306	97.0	73.9	519.4
Flock 3	OPEN HOUSE	HIMACHAL PRADESH	8929	36.6	2854	1.440	1.250	96.0	77.9	519.4
Flock 4	EC HOUSE	MAHARASHTRA	6788	33.6	2494	1.386	1.276	96.3	74.1	515.0
Flock 5	EC HOUSE	MAHARASHTRA	9979	32.3	2348	1.369	1.292	97.1	72.6	514.9
Flock 6	OPEN HOUSE	PUNJAB	8168	35.2	2667	1.430	1.282	96.1	75.7	508.5
Flock 7	EC HOUSE	MAHARASHTRA	13820	33.4	2428	1.400	1.305	97.2	72.8	505.3
Flock 8	OPEN HOUSE	PUNJAB	3506	31.2	2302	1.390	1.323	95.0	73.8	504.0
Flock 9	EC HOUSE	MAHARASHTRA	8695	32.4	2246	1.347	1.292	97.7	69.4	503.2
Flock 10	OPENHOUSE	PUNJAB	9694	36.1	2673	1.430	1.280	97.1	74.1	503.0

एक्सपैटिका बायोफार्मास्यूटिका प्राइवेट लिमिटेड और एबीटेक लिमिटेड

ने अनुसंधान एवं विकास सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। पश्चिम बंगाल के माननीय राज्यपाल डा. सी.वी. आनंद बोस ने वाईईएलएम Pro® का अनावरण किया।

कोट्टायम, 10.01.2026

एक्सपैटिका बायोफार्मास्यूटिका ने एग्रो बायोटेक रिसर्च सेंटर लिमिटेड (एबीटेक) के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस समारोह की अध्यक्षता पश्चिम बंगाल के माननीय राज्यपाल डॉ. सी.वी. आनंद बोस, एबीटेक लिमिटेड के अध्यक्ष श्री के.एम. जैकब, डॉ. सचिंद्र नाथ मंडल (कार्यकारी निदेशक, एक्सपैटिका बायोफार्मास्यूटिका) और डॉ. मिथिलेश कुमार जायसवाल (अतिरिक्त निदेशक, अनुसंधान एवं विकास) ने की।

एक्सपैटिका बायोफार्मास्यूटिका प्राइवेट लिमिटेड मुंबई, जिसे "सपनों का शहर" कहा जाता है, में स्थित एक्सपैटिका बायो फार्मास्यूटिका लिमिटेड, "बायोफार्मास्यूटिकल्स के लिए विशेषज्ञ मार्गदर्शक" के दर्शन से प्रेरित एक कंपनी है, जो ISO 9001 और GMP प्रमाणित है और उद्योग पशु चिकित्सकों और शोधकर्ताओं के संघ की सदस्य है। एक्सपैटिका बायोफार्मास्यूटिका एक नई पीढ़ी की, अनुसंधान–आधारित, नवोन्मेषी भारतीय बायोफार्मास्यूटिकल्स कंपनी है जो "पर्यावरण–सुरक्षित नवोन्मेषी जैविक घटकों" की एक विस्तृत श्रृंखला के उपयोग के माध्यम से बेहतर पशु स्वास्थ्य और पोषण के लिए पशु चिकित्सा फार्मास्युटिकल फॉर्मूलेशन में उत्कृष्टता के नए स्तर प्रदान करती है।

कोट्टायम, जिसे "अक्षरों का शहर" कहा जाता है, में स्थित एग्रो बायोटेक रिसर्च सेंटर लिमिटेड (एबीटीसी) जैव विज्ञान नवाचार में अग्रणी है और अत्याधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से मानव, पशु और पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। एबीटीसी लिमिटेड प्राकृतिक और जैविक उत्पादों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। नवाचार के प्रति जुनून और अनुसंधान उत्कृष्टता के प्रति समर्पण से प्रेरित होकर, एबीटीसी जैव विज्ञान उद्योग में एक अग्रणी शक्ति के रूप में विकसित हुआ है।

अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) पहलों पर सहयोग करने के लिए इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इस समझौता ज्ञापन के तहत, दोनों संगठन एक ज्ञान मंच बनाने का लक्ष्य रखते हैं। इस रणनीतिक साझेदारी का उद्देश्य कृषि–पशु चिकित्सा क्षेत्र के लिए अभिनव प्रोबायोटिक और फाइटोबायोटिक समाधान विकसित करने के लिए दोनों कंपनियों की शक्तियों का

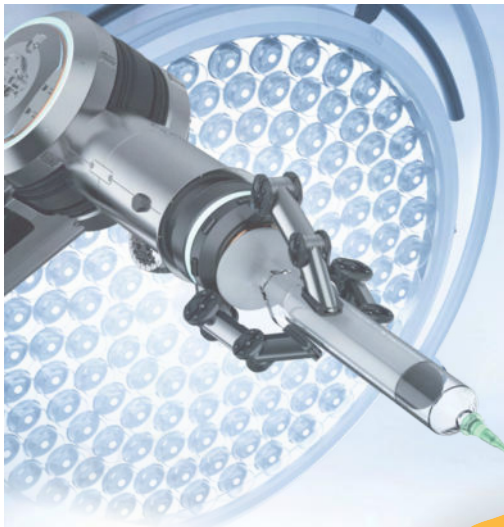

Venworld®
THE BEST IN ANIMAL HEALTHCARE

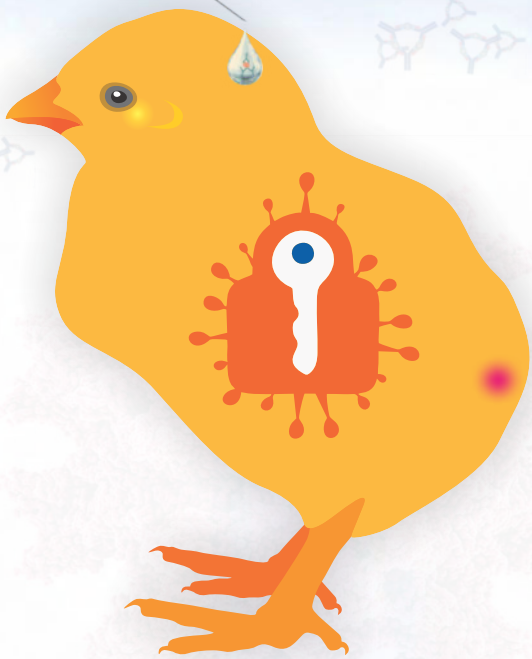

UNLOCK THE IMMUNITY
AT THE RIGHT TIME,
WITH THE RIGHT STRAIN

IBD-VIPx

VENTRI'S IMMUNE PLUS COMPLEX

'CATCHING UP WITH THE FUTURE'

VENTRI BIOLOGICALS
(Vaccine Division of VHPL)

'Venkateshwara House', S. No. 114/A/2, Pune Sinhagad Road, Pune 411030. **Tel.:** +91 (020) 24251803, **Fax:** +91-20-24251060 / 24251077.

Email: ventri.biologicals@venkys.com **www.venkys.com**

लाभ उठाना है। यह सहयोग पशु पोषण और प्रौद्योगिकी में वैश्विक स्तर पर प्रचलित अच्छी प्रथाओं को साझा करने पर केंद्रित होगा।

YLEM Pro® एक अनूठा संयोजन है जिसमें नैदानिक रूप से अध्ययन किए गए 4–इन–1 पोस्टबायोटिक्स, पैराप्रोबायोटिक्स, प्रोबायोटिक्स और प्रीबायोटिक्स शामिल हैं। ये सभी मिलकर प्रशिक्षित प्रतिरक्षा को बढ़ाते हैं और आंत के माइक्रोबायोम को संतुलित रखते हैं। "YLEM" शब्द "ब्रह्मांडीय अंडा" की अवधारणा से संबंधित है, जिसे "ब्रह्मांड" भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें विभिन्न कार्यों के लिए कई घटक समाहित हैं। यह उत्पाद एंटीबायोटिक्स के विकल्प के रूप में एक नया बहुआयामी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। YLEM Pro® एक्सपैटिका और एग्रो बायो–टेक रिसर्च सेंटर लिमिटेड (ABTEC) के सहयोग से किए गए अनुसंधान एवं विकास प्रयासों का परिणाम है, जिसका उद्देश्य नए आंत–जैविक पदार्थों की स्क्रीनिंग और विकास करना है। इस उत्पाद में उपयोग किए गए सभी प्रोबायोटिक स्ट्रेन स्थिर प्रकृति के हैं।

ABTEC लिमिटेड के अध्यक्ष, श्री के.जे. जेकब ने कहा, "एक्सपैटिका के नवाचार और एबीटेक के अनुसंधान एवं विकास आधार का संयोजन निश्चित रूप से हमारे स्टार्टअप्स को अतिरिक्त बढ़ावा देगा। इस साझेदारी का उद्देश्य इरादे से आगे बढ़कर कार्यान्वयन की ओर बढ़ना है, जिससे इस समझौता ज्ञापन को मापने योग्य परिणामों और ठोस नतीजों में बदला जा सके। मैं दोनों संगठनों के प्रबंधन और समर्पित टीमों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिन्होंने इस समझौते को सफल बनाने के लिए अथक परिश्रम किया है।"

एक्सपैटिका बायोफार्मास्युटिका के कार्यकारी निदेशक डॉ. सचिंद्र नाथ मंडल ने कहा, "यह साझेदारी जैव–औषधीय नवाचार को बदलने की हमारी साझा यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ है। हमारा सहयोग अनुसंधान एवं विकास को गति देगा और वैज्ञानिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देगा। हम मिलकर वैश्विक स्वास्थ्य पर सार्थक प्रभाव डालने के लिए प्रतिबद्ध हैं।"

एबीटीईसी लिमिटेड के प्रबंध निदेशक और सीईओ श्री बिबिन जैकब ने कहा, "कृषि– पशुधन और स्टार्टअप उद्यमिता में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए एबीटीसी लिमिटेड के साथ साझेदारी करके हम उत्साहित हैं।"

अनुसंधान एवं विकास के अतिरिक्त निदेशक डॉ. मिथिलेश जायसवाल ने कहा, "यह सहयोग कृषि–पशुधन के सतत स्वास्थ्य लाभों के लिए प्रभावी और पर्यावरण के अनुकूल समाधान विकसित करने और प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता के अनुरूप है।"

नोवस ने वैश्विक सोयाबीन डेटा जारी किया

पोल्ट्री और सूअर के आहार में छिपे जोखिम को उजागर किया

चेस्टरफील्ड, मिसौरी, 26 जनवरी, 2026

सोयाबीन मील विश्व भर में पोल्ट्री और सूअर के आहार का एक प्रमुख घटक है, लेकिन सोयाबीन की गुणवत्ता में भिन्नता पोषण की दृष्टि से पशुओं के लिए और आर्थिक रूप से उत्पादकों के लिए छिपे जोखिम पैदा करती है।

नोवस के एक नए श्वेत पत्र में एक दशक से अधिक के डेटा का उपयोग करते हुए यह बताया गया है कि सोयाबीन मील में ट्रिप्सिन अवरोधक (टीआई) आधुनिक फ़ीड निर्माण में एक लगातार और अक्सर अनदेखा किया जाने वाला मुद्दा क्यों है।

नोवस की वैश्विक एंजाइम और माइक्रोबियल वरिष्ठ प्रबंधक, रशा कुदसीह कहती हैं, "सोयाबीन मील अधिकांश आहारों में प्रोटीन का सबसे बड़ा स्रोत है, फिर भी इसके पोषण मूल्य को अक्सर मापा नहीं जाता बल्कि मान लिया जाता है।" "विश्व स्तर पर 1,900 से अधिक सोयाबीन मील के नमूनों से प्राप्त हमारे आंकड़ों से पता चलता है कि ट्रिप्सिन अवरोधकों का स्तर क्षेत्रों, वर्षों और प्रसंस्करण विधियों के अनुसार अत्यधिक परिवर्तनशील होता है, और ट्रिप्सिन अवरोधकों में थोड़ी सी भी वृद्धि अमीनो अम्ल की पाचन क्षमता, चारा दक्षता और पशुओं के प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है।"

ट्रिप्सिन अवरोधक पौधों की प्राकृतिक सुरक्षा प्रणाली का हिस्सा हैं जो प्रोटीन के पाचन में भी बाधा डालते हैं। हालांकि आमतौर पर इन्हें कम संसाधित सोयाबीन से जोड़ा जाता है, लेकिन नोवस के शोध में पाया गया कि ट्रिप्सिन अवरोधक व्यावसायिक रूप से संसाधित सोयाबीन मील में भी मौजूद रह सकते हैं, जिससे मुर्गी और सूअर दोनों के आंतों के स्वास्थ्य और विकास पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

"हमने वैश्विक स्तर पर सैकड़ों सोयाबीन मील के नमूनों का विश्लेषण किया है, जिससे ट्रिप्सिन अवरोधकों पर एक व्यापक डेटाबेस तैयार हुआ है। हमने ट्रिप्सिन अवरोधकों (TI) को सटीक रूप से मापने के लिए व्यावहारिक तरीके विकसित करने में भी वर्षों का समय लगाया है," नोवस विश्लेषणात्मक सेवाओं की वरिष्ठ प्रबंधक पाउला फिशर कहती हैं। "यह शोधपत्र हमारे द्वारा प्राप्त ज्ञान को साझा करता है और बताता है कि पशु प्रदर्शन में स्थिरता और वित्तीय लाभ में पूर्वानुमान सुनिश्चित करने वाले पोषण विशेषज्ञों के लिए ट्रिप्सिन अवरोधकों (TI) की नियमित निगरानी करना क्यों तेजी से महत्वपूर्ण होता जा रहा है।"

'आउटस्मार्टिंग ट्रिप्सिन इनहिबिटर्स'' नामक श्वेतपत्र में निम्नलिखित जानकारी शामिल है:

- पशु आहार के संदर्भ में ट्रिप्सिन अवरोधकों (TI) का कोई "सुरक्षित" स्तर क्यों नहीं है
- वैश्विक स्तर पर और विभिन्न सोयाबीन उत्पादों में TI का स्तर कैसे भिन्न होता है
- केवल ऊष्मा प्रसंस्करण से जोखिम समाप्त क्यों नहीं होता
- मुर्गी और सूअर के प्रदर्शन पर ट्रिप्सिन अवरोधकों (TI) के प्रलेखित प्रभाव
- ट्रिप्सिन अवरोधकों (TI) से संबंधित जोखिम को मापने और प्रबंधित करने के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ

नोवस अपने वैश्विक ट्रिप्सिन अवरोधक डेटाबेस में एकत्रित नई जानकारी को शामिल करने के लिए श्वेतपत्र को वार्षिक रूप से अद्यतन करने की योजना बना रहा है, जिससे उद्योग को सोयाबीन की गुणवत्ता और ट्रिप्सिन अवरोधकों (TI) के रुझानों का एक विकसित दृष्टिकोण प्राप्त हो सके।

ऑलटेक दक्षिण एशिया ने

पोल्ट्री पोषण शिखर सम्मेलन 2025

का आयोजन किया

पशु स्वास्थ्य और पोषण के क्षेत्र में अग्रणी वैश्विक कंपनी ऑलटेक ने 16–18 दिसंबर तक कोलंबो, श्रीलंका स्थित सिनेमन लाइफ में दक्षिण एशिया पोल्ट्री पोषण शिखर सम्मेलन 2025 का सफलतापूर्वक आयोजन किया। "लाभदायक और टिकाऊ पोल्ट्री उत्पादन के लिए स्मार्ट पोषण" विषय पर केंद्रित इस तीन दिवसीय शिखर सम्मेलन में दक्षिण एशिया भर से 85 से अधिक वरिष्ठ उद्योग प्रतिनिधि एकत्रित हुए, जिनमें पोल्ट्री पोषण विशेषज्ञ, फ़ीड मिल मालिक, इंटीग्रेटर और उद्योग जगत के नेता शामिल थे।

पोल्ट्री पोषण का दायरा उत्पादन दक्षता से आगे बढ़कर जैविक प्रदर्शन, आर्थिक व्यवहार्यता, स्थिरता, जैव सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और पक्षी कल्याण जैसे समग्र दृष्टिकोण को अपना रहा है। कच्चे माल की अस्थिर कीमतों, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और बढ़ती उत्पादन लागत के बढ़ते दबाव के कारण, विज्ञान–आधारित स्मार्ट पोषण रणनीतियों की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

दक्षिण एशिया पोल्ट्री पोषण शिखर सम्मेलन 2025 ने व्यावहारिक और नवोन्मेषी समाधानों पर केंद्रित ज्ञान–साझाकरण मंच प्रदान करके इन चुनौतियों का समाधान किया, जो पक्षियों के प्रदर्शन से समझौता किए बिना आर्थिक संतुलन बनाए रखने में मदद कर सकते हैं। शिखर सम्मेलन का एजेंडा भविष्य के पोल्ट्री रुझान, फ़ीड मिल से फ़ार्म तक दक्षता, आंत स्वास्थ्य, सटीक आहार, फ़ीड निर्माण, मांस उत्पादन अनुकूलन और स्थिरता–संचालित पोषण रणनीतियों जैसे प्रमुख उद्योग विषयों को शामिल करने के लिए तैयार किया गया था।

इस कार्यक्रम में वैश्विक और क्षेत्रीय विशेषज्ञों का एक प्रतिष्ठित पैनल शामिल था, जिसमें प्रसिद्ध पोल्ट्री पोषण विशेषज्ञ और वैश्विक सलाहकार डॉ. रिक क्लेयन शामिल थे, जिन्होंने वर्तमान उद्योग की वास्तविकताओं के अनुरूप उन्नत पोषण

रणनीतियों पर अंतर्दृष्टि साझा की; ऑलटेक में रणनीतिक पोल्ट्री सलाहकार डॉ. रॉय ब्रिस्टर, जिन्होंने पोल्ट्री प्रदर्शन और लाभप्रदता में सुधार के लिए डेटा–संचालित निर्णय लेने और सटीक पोषण के महत्व पर प्रकाश डाला; और पुसल्ला मीट प्रोड्यूसर्स प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्री दिलसान वेविवा, जिन्होंने दर्शकों को श्रीलंकाई पोल्ट्री उद्योग का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया, जिसमें प्रमुख अवसरों और मौजूदा चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया।

ऑलटेक के अनुसंधान निदेशक डॉ. रिचर्ड मर्फी ने आंत स्वास्थ्य प्रबंधन पर एक ज्ञानवर्धक सत्र प्रस्तुत किया, जबकि ऑलटेक के दक्षिण एशिया के तकनीकी निदेशक डॉ. लोकेश गुप्ता ने उद्योग की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार किए गए ऑलटेक के नवोन्मेषी, विज्ञान–आधारित समाधानों पर प्रकाश डाला। ज्ञान के आदान–प्रदान को और मजबूत करते हुए, शिखर सम्मेलन ने विशेषज्ञ नेतृत्व वाले तकनीकी सत्रों, पैनल चर्चाओं और नवाचार संबंधी संक्षिप्त जानकारियों के माध्यम से योगदान दिया, जिससे प्रतिभागियों को वास्तविक पोल्ट्री संचालन में लागू होने वाली व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में मदद मिली।

ऑलटेक के भारत के प्रबंध निदेशक और दक्षिण एशिया के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अमन सैयद ने कहा, "दक्षिण एशिया पोल्ट्री पोषण शिखर सम्मेलन 2025 को पोल्ट्री पेशेवरों को दक्षता, लचीलापन और स्थिरता में सुधार के लिए आवश्यक व्यावहारिक ज्ञान और रणनीतिक अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।" उन्होंने आगे कहा, "उद्योग के लिए तेजी से जटिल होते बाजार परिवेश में आगे बढ़ने के लिए सहयोग और निरंतर सीखना आवश्यक है।"

ऑलटेक दक्षिण एशिया पोल्ट्री पोषण शिखर सम्मेलन 2025 ने पोल्ट्री पेशेवरों को पोल्ट्री उत्पादन के भविष्य को आकार देने वाले नवीनतम पोषण संबंधी नवाचारों से जुड़ने, सीखने और उनका पता लगाने के लिए एक मूल्यवान मंच प्रदान किया।

अधिक जानकारी के लिए, **www.alltech.com** पर जाएं

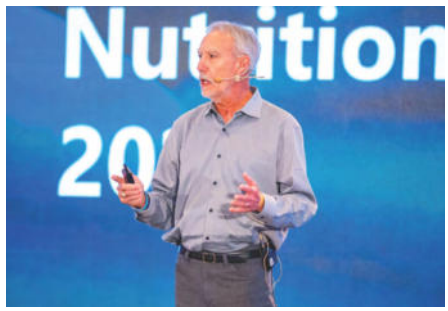

GRAND CELEBRATIONS

PVS Group Celebrates 33 Years of Leadership in Animal & Aqua Health

The **PVS Group**, India's largest manufacturer and exporter in the **Animal and Aqua Health Care Industry**, proudly celebrated its **33rd Anniversary** on **7th and 8th January 2026**, marking over three decades of excellence, innovation, trust, and global leadership.

PVS represents **Poultry, Veterinary, and Shrimp (Aqua)**, reflecting the Group's integrated commitment to total animal and aquaculture health. The name also honors the vision of its founder, **Dr. Pamulapati Venkata Seshaiah**, whose foresight and dedication laid the foundation of this globally respected enterprise.

The **33rd Annual Meet** was truly unique, designed to reflect **learning, culture, unity, and values**, much like a premier educational institution. Under the guidance of **CMD Dr. PVS** and **Director Mr. Arun**, the celebration became a vibrant platform of employee engagement, creativity, and pride. A special highlight was the **cultural programs performed entirely by PVS employees**, reinforcing that **PVS is one family, not just an organization.**

Adding global prestige, **chief guests from Spain, Vietnam, Uganda, Nigeria, Syria,** and **Tanzania** attended the event. They appreciated PVS's **business transparency, consistent product quality, technicalstrength, and long-term partnership approach**, while sharing a clear roadmap for future global collaborations.

The event also recognized excellence through awards for **Best Employee, Legendary Employee, Best Contributor,** and **Outstanding Cultural Performers**, reaffirming PVS's belief that employees are its greatest strength.

More than **650 PVS family members** from manufacturing, R&D, offices, and sales & marketing—along with the **Vietnam team**—celebrated together as **One Global PVS Family**. Business Unit Heads finalized budgets and targets, committing to achieve ambitious goals for the coming year.

With evaluations spanning **performance, culture, sports, yoga, wellness, and engagement**, the celebration reflected PVS's people-centric culture. At its new corporate office, PVS continues to celebrate festivals and special days, fostering unity, inclusivity, and belonging.

As PVS Group completes **33 glorious years**, it reaffirms its commitment to **innovation, ethical global expansion, employee well-being, and transparent international partnerships**—moving forward stronger, united, and ready to lead the global Animal & Aqua Health industry into the future.

ANNUA

METABO
METABO
METABO

ANNUAL

33

AB

PUR

पोल्ट्री रोग नियंत्रक में नैदानिक तकनीकों की निर्णायक भूमिका

डां संध्या मोरवाल
सहायक आचार्य
पशुचिकित्सा और पशुविज्ञान महाविद्यालय –बीकानेर (राजुवास)

पोल्ट्री पालन व्यवसाय, आज पशुपालन क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण संगठित और तीव्र गति से विकसित होने वाला क्षेत्र हैं। बढती जनसंख्या के साथ अंडा एवं मांस की मांग में निरंतर वृदि हो रही हैं। ऐसी स्थिति में पोल्ट्री फार्मो में रोगों का समय पर नियंत्रण न केवल आर्थिक दृश्टि से बल्कि जनस्वास्थ्य की दृश्टि से भी अत्यन्त आवश्यक हो गया हैं। हांलाकि पोल्ट्री पालन में आधुनिक प्रबंधन तकनीकों का प्रयोग बढा हैं, फिर भी संक्रामक रोग, चयापचयी विकार तथा प्रबंधन समस्याएं आज भी आर्थिक नुकसान का कारण बनती हैं। सही औशधि का चयन तभी संम्भव हैं जब रोग का सटीक एवं वैज्ञानिक निदान किया जाए । अनुमान या अनुभव के आधार पर किया गया उपचार अक्सर औशधि प्रतिरोध, वैक्सीन विफलता तथा उच्च मृत्यु दर को जन्म देता हैं। अतः यह स्पश्ट हैं कि पोल्ट्री चिकित्सा में निदान ही उपचार की रीढ हैं।

पोल्ट्री रोगों की प्रमुख समस्याएँः

पोल्ट्री में वायरल, बैक्टीरियल, आंतिरिक और ब्राहय परजीवी तथा पोशण संबधी अनेक रोग पाए जाते हैं जिनमें न्यूकैसल रोग, एवियन इन्फलुएंजा, कोक्सीडियोंसिस, साल्मोनेलोसिस, मायकोप्लाज्मोसिस प्रमुख रोग हैं। इन रोगों के नैदानिक लक्षण कई बार एक– दूसरे से मिलते जुलते होते है। अनुमान आधारित उपचार वायरल, बैक्टीरियल, आंतिरिक और ब्राहय परजीवी तथा पोशण संबधी से एन्टीमाइक्रोबिल, आर्थिक नुकसान तथा पोल्ट्री फार्म में पक्षीयों की मृत्युदर में बढोतरी हो सकती हैं।

नैदानिक तकनीकें क्या हैः

नैदानिक तकनीकें वे वैज्ञानिक विधियॉ हैं, जिनकी सहायता से रोग के वास्तविक कारण की पहचान की जाती हैं इसमें मुख्यतः शामिल हैंः–

परिक्षण के प्रकार

- नैदानिक परिक्षण
- पोस्टमार्टम परिक्षण
- प्रयोगशाला आधारित परिक्षण

अ) नैदानिक परिक्षण

1. अस्वस्थ पक्षीयों में व्यवहार का अवलोकन।
2. स्वस्थ और अस्वस्थ पक्षीयों में रिकॉर्ड का विश्लेशण।
3. पक्षियों की शारीरिक जॉच।
4. मुख्य नैदानिक लक्षण

1. **अस्वस्थ पक्षीयों में व्यवहार का अवलोकनः** स्वस्थ पक्षी सामान्यतः सक्रिय,सतर्क एवं चुस्त दिखाई देते है। स्वस्थ पक्षी समय पर दाना खाते हैं,पानी पीते हैं तथा झुंड में सामान्य रूप से चलते–फिरते हैं। उनके पंख साफ और चमकदार होते हैं तथा सांस लेने में कोई कठिनाई नही होती हैं। व्यवहार में सुस्ती या अलग–थलग रहना रोग का संकेत हो सकता हैं।

2. **स्वस्थ और अस्वस्थ पक्षीयों में रिकॉर्ड का विश्लेषणः** फार्म रिकॉर्ड का विश्लेशण (मृत्यु दर कितनी, फीड इटेक), रोग पहचान का महत्तवपूर्ण माध्यम हैं। स्वस्थ पक्षियों में मृत्यु दर कम तथा फीड इनटेक सामान्य रहता हैं। अस्वस्थ पक्षियों में फीड इनटेक घट जाती है और मृत्यु दर बढ सकती है। इन आंकडों से रोग की गंभीरता और प्रबंधन की स्थिती का आंकलन किया जाता हैं।

3. **पक्षियों की शारीरिक जॉचः** शारीरिक जांच में आखों, नासाछिद्र, चोंच, त्वचा, पंख एवं पैरों का निरीक्षण किया जाता

है। शरीर का तापमान, वजन और निर्जलीकरण की स्थिती भी देखी जाती है। दस्त, सूजन या चोट जैसे लक्षणों पर विशेश ध्यान दिया जाता हैं। यह जांच रोग के प्रारंभिक निदान में सहायक होती हैं।

4. **पोल्ट्री फार्म पर मुख्य नैदानिक लक्षणः**

लक्षण	संबंधित रोग
अण्डा देने में कठिनाई	एग बाइडिग, अंडाशयशोंथ (ओवरीटिस), अंडवाहिनीशोथ (साल्पिन्जाइटिस), न्यूकैसल रोग
हरा दस्त	न्यूकैसल रोग, साल्मोनेलोसिस, फाउल कालेरा
खूनी दस्त	काक्सीडियोसि
अण्डा उत्पादन में कमी	सस्क्रामक ब्रोंकाइटिस, यूकैसल रोग, एगड्राप सिंड्राम, माइकोप्लाज्मोसिस
तंत्रिकीय तक्षण	यूकैसल रोग, मारेक्स रोग, बोटुलिज्म

नैदानिक निदान का महत्वः

नैदानिक निदान से प्रारंभिक औशधि चयन में सहायता मिलती है, जैसे–एंटीबायोटिक्स, एंटीकोक्सीडियलस, इलेक्ट्रोलाइट तथा सहायक उपचार ।

(ब) मृत्योपरांत शव परिक्षण

मृत्योपरांत शव परिक्षण में पाए जाने वाले घाव,रोग की पुष्टि के लिए मजबूत संकेत प्रदान करते हैं।

घाव	संभावित रोग
प्रोवेट्रिकुलस में रक्तस्त्राव	न्यूकैसल रोग
एयरसैक्स में चीजी पदार्थ	सीराडी (मायकोप्लाज्मोसिस)
आंत में बटन अल्सर	न्यूकैसल रोग
सीकल कोर	कोक्सीडियोसिस (ई टेला)
बढा हुआ यकृत व प्लीहा	फाउल टाइफाइड

मृत्योपरांत शव परिक्षण की औषधि चयन में भूमिका

पोस्टमार्टम परीक्षण से विशिष्ट एंटीबायोटिक, एंटीकोक्सीडियल औषधियों तथा दवाई के शरीर से बाहर निकलने के समय के निर्धारण करने में सहायता मिलती हैं।

(स) प्रयोगशाला आधारित निदान

प्रयोगशाला में खून परीक्षणः खून परीक्षण के दौरान कुल श्वेत रक्त कोशिका गणना, श्वेत कोशिका के प्रतिशत वितरण, संकुचित रक्त कोशिका मापन, शरीर में हीमोग्लोबिन का मापन।

1. **कुल श्वेत रक्त कोशिका गणना का महत्वः**

कुल श्वेत रक्त कोशिका गणना से पक्षी में संक्रमण और सुजन का पता चलता हैं।

- कुल श्वेत रक्त कोशिका गणना का बढना बैक्टीरियल संक्रमण, सेप्टीसीमिया, सीआरडी, ल्युकोसाइटोसिस स्थित, कोलीबेसिलोसिस के संक्रमण को दिखाता हैं।
- कुल श्वेत रक्त कोशिका गणना का घटना वायरल रोग जैसे रानीखेत, मेरिक्स रोग, ल्युकोपीनिया इत्यादी के बारे में जानकरी देता हैं।
- कुल श्वेत रक्त कोशिका गणना रोग की गम्भीरता और प्रतिरक्षा जानने में सहायक होता हैं।

2. **श्वेत कोशिका के प्रतिषत वितरण का महत्वः**

श्वेत कोशिका के प्रतिशत वितरण से रोग का प्रकार (वायरल/बैक्टीरियल/परजीवी) पहचाना जाता हैं।

- **लिम्फोसाइट कम होना** – वायरल रोग
- **हिटरोफीलस बढना** – बैक्टीरियल संक्रमण
- **हिटरोफीलसः लिम्फोसाइट अनुपात बढना** – तनाव का संकेत।
- श्वेत कोशिका के प्रतिशत वितरण रोग निदान में कुल श्वेत रक्त कोशिका गणना से अधिक विशिष्ट जानकारी देता हैं।

3. **संकुचित रक्त कोशिका मापन का महत्वः**

- संकुचित रक्त कोशिका आयतन मापन से पक्षी में एनीमिया या निर्जलीकरण का पता चलता हैं।
- संकुचित रक्त कोशिका आयतन मापन कम होना बताता है कि पक्षी रक्तस्त्राव, परजीवी संक्रमण, कोक्सीडियोसिस से प्रभावित हो सकता है।
- संकुचित रक्त कोशिका आयतन मापन का बढना बताता है कि पक्षी निर्जलीकरण या हीट स्ट्रेस को बताता हैं।
- संकुचित रक्त कोशिका आयतन मापन रोग की गंभीरता और प्रग्नोसिस में उपयोगी है।

4. **शरीर में हीमोग्लोबिन मात्रा मापन का महत्वः** शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा के मापन से पक्षी का आक्सीजन वहन क्षमता का आंकलन होता हैं।

- शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा का कम होना एनिमिया, कोक्सीडियोसिस एवमं रक्तस्त्रावी रोग की आशंका को बताता है।
- शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा का अधिक होना निर्जलीकरण को बताता है।
- शरीर में हीमोग्लोबिन मात्रा मापन शरीर में कमजोर, सुस्ती और उत्पादन में गिरावट के कारण समझने में सहायक रहता हैं।

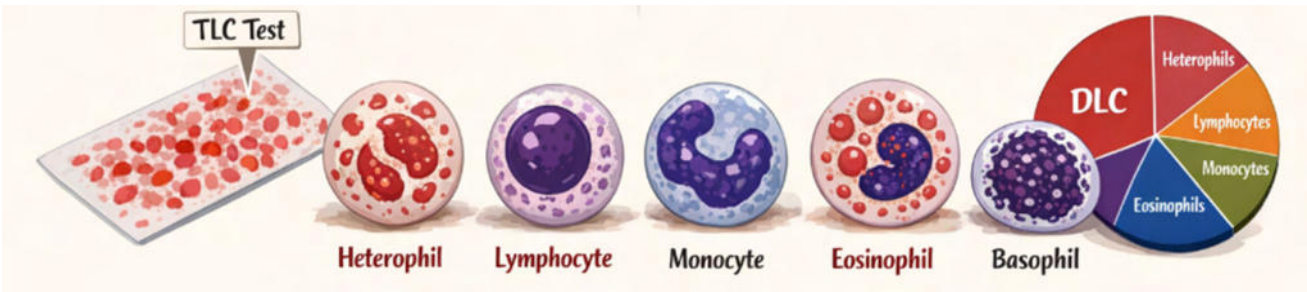

कुल श्वेत रक्त कोशिका गणना और श्वेत कोशिका के प्रतिशत वितरण रोग की प्रकृति बताते हैं जबकि शरीर में संकुचित रक्त कोशिका मापन और हीमोग्लोबिन की मात्रा रोग की गभीरता और पक्षी की शारीरिक स्थिति दर्शाते हैं।

(द) सीरोलॉजिल परीक्षण का महत्व

सीरोलॉजिल परीक्षण का महत्व पोल्ट्री रोगों के निदान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- इन परीक्षणों द्वारा रक्त में उपस्थित एंटीबॉडी या एंटीजन का पता लगाया जाता हैं।
- यह परीक्षण यह जानने में सहायक होते हैं कि पक्षी किस रोग से संक्रमित हुआ है या नही ।
- वैक्सीनेशन के बाद एंटीबॉडी टाइटर के माध्यम से वैक्सीन की प्रभावशीलता का आकंलन किया जाता है।
- सीरोलॉजिल परीक्षण झुण्ड स्तर पर रोग की स्थिती जानने में उपयोगी होते है। रोग के प्रसार और मॉनिटरिग में इनका विशेश महत्व हैं।
- बूस्टर वैकसीनेशन की आवश्यकता तय करने में यह परीक्षण सहायक हैं। अनावश्यक दवाओं के उपयोग से बचाव संभव होता हैं।
- IBD, ND, IB AI जैसे रोगों में सीरोलॉजिकल परीक्षण अत्यंत उपयोगी हैं। ये परीक्षण अपेक्षाकृत सरल, किफायती और फील्ड वाली स्थिती में भी उपयोगी होते हैं।

5. मॉलिक्यूलर डायग्नोस्टिक तकनीकें रोग का महत्वः

- मॉलिक्यूलर डायग्नोस्टिक तकनीकें रोग के अत्यंत प्रारंभिक निदान में सहायक होती हैं।
- इन तकनीकों द्वारा रोगजनक के डीनए और आरनए की पहचान की जाती है। पीसीआर, आरटी– पीसीआर, रियल टाइम पीसीआर सबसे अधिक प्रचलित मॉलिक्यूलर डायग्नोस्टिक तकनीकें हैं।
- ये तकनीकें अत्यधिक संवेदनशील और विशिश्ट होती हैं। सब–क्लिनिकल संक्रमण का भी सटीक पता लगाया जा सकता हैं। रोग की शीघ्र पहचान से मृत्यु दर और आर्थिक नुकसान को कम किया जा सकता हैं।
- वायरल रोगों जैसे IBD, ND, IB, AI जैसे रोगों में इनका विशेष महत्व हैं।
- सीरोलॉजिकल परीक्षण की तुलना में ये अधिक विश्वसनीय परिणाम प्रदान करती हैं।
- रोगजनक की स्ट्रेन पहचान और म्यूटेशन अध्ययन में भी उपयोगी होती हैं। रोग नियेत्रण, बायोसिक्योरिटी और प्रभावी प्रबंधन रणनीति बनाने में सहायक होती हैं।

रोग नियंत्रण में नैदानिक तकनीकों का महत्वः

1. **सटीक रोग पहचानः** नैदानिक परीक्षण रोग के वास्तविक कारण (वायरल, बैक्टीरियल, आंतिरिक और ब्राहय परजीवी) की पुश्टि करते हैं, जिससे सही उपचार संभव होता है।
2. **विवेकपूर्ण दवा उपयोगः** बिना निदान के दवा देने से अनावश्यक एंटीबायोटिक उपयोग होता है। नैदानिक तकनीकें रैशनल मेडिसिन उपयोग को बढावा देती है।
3. **दवा प्रतिरोध की रोकथामः** सही दवा, सही मात्रा और सही समय पर देने से एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस की समस्या को रोका जा सकता हैं।
4. **आर्थिक नुकसान में कमीः** समय पर और सही निदान से मृत्यु दर घटती है, उत्पादन बढता हैं और किसान को आर्थिक लाभ होता हैं।
5. **जन स्वास्थ्य की सुरक्षाः** पोल्ट्री से संबंधित कई रोग जूनोटिक होते है। सही निदान से स्वास्थ्य को भी सुरक्षित किया जा सकता हैं।

आधुनिक नैदानिक तकनीकों की भूमिका

आज के समय में मॉलिक्यूलर डायग्नोस्टिक और रैपिड डायग्नोस्टिक किट्स जैसी आधुनिक तकनीकों ने रोग पहचान को तेज, सटीक और विश्वसनीय बना दिया हैं। इससे रोग के शुरूआती चरण में ही नियंत्रण समंभव हो जाता है।

निश्कर्ष

यह स्पष्ट है कि पोल्ट्री रोग नियंत्रण में नैदानिक तकनीकों की भूमिका अत्यंत निर्णायक है। बिना सही निदान के उपचार करना न केवल अप्रभावी है, बल्कि हानिकारक भी हो सकता है। इसलिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हुए नैदानिक तकनीकों के उपयोग को बढावा देना आज की आवश्यकता है।

सही निदान ही सफल उपचार और स्वस्थ पोल्ट्री उत्पादन की कुंजी हैं।

(नोटः चित्र केवल जानकारी को समझाने हेतु प्रस्तुत किए गया है।)

सर्दियों के दौरान अंडे देने वाली मुर्गियों का प्रबंधन

सुरभि सिंह[1], ए.के. वर्मा[2], राज कपूर वर्मा[1], के.डी. सिंह[2], एस.एस. कश्यप[1], श्रेय गौतम[3], सोनू जायसवाल[4]

[1]पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग
[2]पशुधन फार्म परिसर विभाग
[3]पशु पोषण विभाग
[4]पशु चिकित्सा क्लिनिकल परिसर, पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, सी.वी.एससी. एवं ए.एच., आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या–224229

परिचय

उत्तरप्रदेश में अंडे देने वाली मुर्गी पालन के लिए सर्दी का मौसम एक महत्वपूर्ण मौसम होता है। दिसंबर से फरवरी तक, किसानों को ठंडी रातों, घने कोहरे (कोहरा), ठंडी हवाओं और उच्च आर्द्रता का सामना करना पड़ता है, खासकर पूर्वी और मध्य उत्तरप्रदेश में। ये स्थितियाँ ठंड के तनाव का कारण बनती हैं, जो सीधे तौर पर चारे के सेवन, अंडे के उत्पादन, अंडे की गुणवत्ता, मुर्गी के स्वास्थ्य और फार्म की लाभप्रदता को प्रभावित करती हैं। अंडे देने वाली मुर्गियाँ पर्यावरणीय तनाव के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती हैं। सर्दियों के दौरान, चारे की अधिकांश ऊर्जा शरीर का तापमान बनाए रखने में खर्च हो जाती है, जिससे अंडे के उत्पादन के लिए कम ऊर्जा बचती है। हालांकि, सरल, कम लागत वाली और वैज्ञानिक शीतकालीन प्रबंधन पद्धतियों से किसान कठोर सर्दियों की परिस्थितियों में भी सफलतापूर्वक उत्पादन बनाए रख सकते हैं।

अंडे देने वाली मुर्गियों के लिए सर्दी का मौसम समस्या क्यों बन जाता है?

सर्दियों में मुर्गियों को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है:

- ठंड का तनाव बढ़ना
- दिन के उजाले में कमी
- ऊर्जा की अधिक आवश्यकता
- श्वसन संबंधी बीमारियों का खतरा बढ़ना
- गीला बिछावन और अमोनिया का जमाव
- सर्दियों में मुर्गी पालन से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए, तापमान, आर्द्रता, बिछावन का उचित प्रबंधन आवश्यक है।
- चारा, पानी, प्रकाश और वेंटिलेशन का प्रबंधन भी महत्वपूर्ण है। मुर्गियों के स्वास्थ्य और उत्पादन पर इसका प्रभाव पड़ता है, इसलिए इनका प्रबंधन करते समय इन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

सर्दियों में मुर्गी पालन करते समय, किसानों को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

1. **मुर्गीघर प्रबंधन:** चूजों और वयस्क मुर्गियों दोनों के लिए मुर्गीघर का तापमान बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। चूजों के आने से एक–दो दिन पहले शेड को पहले से गर्म कर लेना चाहिए। एक दिन के चूजे ठंड के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं क्योंकि उनके शरीर पर पंख नहीं होते और वे वयस्क पक्षियों की तुलना में कम गर्मी पैदा करते हैं, इसलिए सर्दियों में चूजों पर पड़ने वाला तनाव उनकी विकास दर को काफी हद तक प्रभावित कर सकता है। मुर्गीघर या शेड इस तरह से बनाया जाना चाहिए कि सर्दियों में अधिकतम धूप शेड तक पहुंचे। आयताकार मुर्गीघर की पूर्व–पश्चिम व्यवस्था सर्दियों में सबसे अधिक धूप प्रदान करती है। मुर्गीघर में तापमान की एकरूपता भी एक महत्वपूर्ण कारक है। पक्षियों के व्यवहार से यह पता लगाया जा सकता है कि वे मुर्गीघर में सहज महसूस कर रहे हैं या नहीं। यदि पक्षी एक–दूसरे के करीब बैठकर भीड़भाड़ पैदा कर रहे हैं, तो इसका मतलब है कि शेड में तापमान कम है जिससे पक्षी तनावग्रस्त हो रहे हैं। इसे ताप स्रोत बढ़ाकर या शेड में अतिरिक्त ताप स्रोत लगाकर नियंत्रित किया जा सकता है। मुर्गीघरों में कुछ खुली जगहें होती हैं जहां बोरी लटकाकर मुर्गियों को ठंडी हवा से बचाया जा सकता है।
2. **मुर्गीघर का वेंटिलेशन:** मुर्गीघरों में स्लाइडिंग खिड़कियाँ लगाई जानी चाहिए जिन्हें किसान मुर्गीघर का तापमान नियंत्रित करने के लिए खोल सके। दिन के समय इन खिड़कियों को खोलकर अंदर की हवा को ताजी हवा से मिलाया जा सकता है और रात में इन्हें बंद करके मुर्गीघर को गर्म रखा जा सकता है। यदि वेंटिलेशन ठीक से नहीं होता है, तो पक्षियों में श्वसन संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं। यदि अमोनिया या गीले बिछावन की समस्या हो, तो वेंटिलेशन की दर बढ़ाई जा सकती है।
3. **मुर्गीघर के बिछावन का प्रबंधन:** फर्श पर उचित बिछावन सामग्री पक्षियों को जमीन की ठंडक से बचाती है और बिछावन की नमी को कम करती है। सर्दियों में मुर्गीघरों में लगभग 6 इंच बिछावन की आवश्यकता होती है। बिछावन का रखरखाव करना आवश्यक है क्योंकि यह पानी पीने के बर्तनों, बीट और छत से आने वाले पानी से आसानी से गीला हो जाता है। यदि इसका रखरखाव नहीं किया जाता है, तो इससे अवायवीय जीवाणुओं की वृद्धि और अंततः अमोनिया का उत्पादन हो सकता है, जो पक्षियों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। जब बिछावन गीला हो जाता है, तो उसमें गांठें बन जाती हैं, जिसका अर्थ है कि बिछावन को बदलने की आवश्यकता है।
4. **मुर्गीपालन आहार प्रबंधन:** मुर्गियां अपने शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए पोषण का उपयोग करती हैं। जब मौसम ठंडा होता है, तो आहार की मात्रा बढ़ानी पड़ती है क्योंकि सर्दियों में पक्षियों को अपने शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इसलिए, गर्मियों में दिए जाने वाले आहार की तुलना में मुर्गीपालन आहार में उच्च कैलोरी मान होना चाहिए क्योंकि इस प्रकार का आहार पक्षियों को गर्म रखता है। सर्दियों में, 3400 किलो कैलोरी/किग्रा एमिनो एसिड और 23% प्रोटीन की आवश्यकता होती है। एमिनो एसिड के स्तर को अनुशंसित स्तर से भी अधिक बढ़ाने से बेहतर खाद्य रूपांतरण अनुपात (एफसीआर), उच्च विकास दर और अधिकतम अंडा उत्पादन स्तर प्राप्त करने में मदद मिलेगी।
5. **मुर्गीपालन प्रकाश प्रबंधन:** सर्दियों में प्रकाश प्रबंधन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सर्दियों में पक्षी पंख बदलते हैं, और इस दौरान वे अंडा देना बंद कर देते हैं। ऐसी परिस्थितियों में, उन्हें उत्पादन में बनाए रखने के लिए अतिरिक्त प्रकाश देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। सामान्यतः 14–16 घंटे प्रकाश की अवधि अनुशंसित है। इसलिए, अंडे देने वाली मुर्गियों द्वारा उचित अंडा उत्पादन के लिए दिन के उजाले के घंटों को बढ़ाने के लिए शेड में एक बल्ब लगाना उचित हो सकता है।

सर्दियों में होने वाली श्वसन संबंधी बीमारियाँ:

सीआरडी – क्रॉनिक रेस्पिरेटरी डिजीज

(स्थानीय नाम: सर्दी वाली बीमारी/ठंडी की बीमारी)

सामान्य लक्षण:

- छींक आना और खाँसी आना
- नाक बहना
- चेहरे या साइनस में सूजन

सीआरडी का प्रबंधन

1. फार्म पर सख्त जैव सुरक्षा बनाए रखें।
2. बिछावन को सूखा और साफ रखें।
3. मृत पक्षियों का उचित निपटान करें।
4. धूल और हानिकारक गैसों को हटाने के लिए उचित वेंटिलेशन प्रदान करें।

संक्रामक राइनाइटिस

(स्थानीय नाम: नाक और चेहरे की सूजन, नाक फूलना)

सामान्य लक्षण:

- चेहरे और आँखों में गंभीर सूजन
- आँखों से पानी आना और नाक बहना
- चोंच से दुर्गंध आना
- भोजन सेवन और अंडे उत्पादन में कमी

संक्रामक राइनाइटिस का प्रबंधन

1. संक्रमित पक्षी को अलग करें।
2. उचित स्वच्छता और वेंटिलेशन बनाए रखें।
3. पक्षियों की भीड़भाड़ से बचें।

संक्रामक ब्रोंकाइटिस

(स्थानीय नाम: खांसी वाली बीमारी/अंडा गिरने की बीमारी)

सामान्य लक्षण:

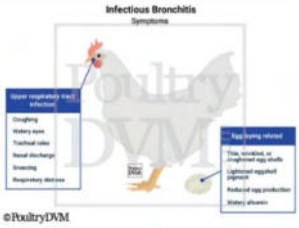

- खांसी और हांफना
- सांस लेने में तकलीफ
- अचानक अंडा गिर जाना
- अंडे के छिलके की खराब गुणवत्ता

संक्रामक ब्रोंकाइटिस का प्रबंधन

1. अच्छी हवादार जगह और स्वच्छता बनाए रखें।
2. तनाव कम करने के लिए भीड़भाड़ से बचें।
3. उचित टीकाकरण कार्यक्रम का पालन करें।

कोक्सीडियोसिस

(स्थानीय नाम: खूनीदस्त/लाल पॉटी)

सामान्य लक्षण:

- खूनी मल
- कमजोरी
- विकास और अंडे उत्पादन में कमी

कोक्सीडियोसिस का प्रबंधन

1. बिछावन को हमेशा सूखा और साफ रखें।
2. भीड़भाड़ से बचें।
3. नमी कम करने के लिए अच्छी हवादार व्यवस्था करें।
4. नियमित रूप से चारे और पानी में कोक्सीडियोसिस रोधी दवा का प्रयोग करें।

ठंडे दिनों में आहार: ऊर्जा ही कुंजी है

ठंडा मौसम अंडे देने वाली मुर्गियों की ऊर्जा आवश्यकता को बढ़ा देता है।

- पक्षी सर्दियों में अधिक चारा खाते हैं।
- मक्का या कम तेल के पूरक आहार से ऊर्जा बढ़ाएँ।
- पक्षियों को सुबह जल्दी और शाम को देर से चारा खिलाएँ।
- चारे को सूखा और फफूंद रहित रखें।
- रोग प्रतिरोधक क्षमता और अंडे की गुणवत्ता में सुधार के लिए विटामिन ए, डी और ई पूरक आहार दें।

उचित आहार यह सुनिश्चित करता है कि पक्षी ऊर्जा का उपयोग अंडे उत्पादन के लिए करें, न कि केवल शरीर की गर्मी के लिए।

पानी: अंडे कम होने का कारण

सर्दियों में पानी का सेवन कम हो जाता है, लेकिन यह उतना ही महत्वपूर्ण रहता है।

- हर समय स्वच्छ, ताज़ा पानी उपलब्ध कराएं
- अत्यधिक ठंड के दौरान हल्का गुनगुना पानी दें
- पीने के बर्तनों को प्रतिदिन साफ करें
- कम पानी पीने से अंडे अचानक गिर सकते हैं

पानी कम = अंडा कम

प्रकाश ही जीवन है: सर्दियों में अंडे गिरने से रोकें

छोटे दिन अंडे देने वाले हार्मोन को कम कर देते हैं।

- प्रतिदिन 14–16 घंटे प्रकाश प्रदान करें
- बल्ब या एलईडी लाइट का उपयोग करें
- सुनिश्चित करें कि प्रकाश समान रूप से वितरित हो
- टाइमर एक निश्चित प्रकाश व्यवस्था बनाए रखने में सहायक होते हैं

उचित प्रकाश व्यवस्था से पक्षी लगातार अंडे देते रहते हैं।

स्वास्थ्य देखभाल: रोकथाम नुकसान से बेहतर है

- उचित टीकाकरण कार्यक्रम का पालन करें
- भीड़भाड़ से बचें
- बिछावन को सूखा और अमोनिया–मुक्त रखें
- निवारक सहायता के रूप में विटामिन और इलेक्ट्रोलाइट्स का उपयोग करें
- बीमारी के शुरुआती लक्षण दिखने पर पशु चिकित्सक से संपर्क करें

समय पर कार्रवाई करने से पक्षियों, चारे और पैसे की बचत होती है।

अंडे संग्रह और प्रबंधन: हर अंडे की सुरक्षा करें

- अंडे बार–बार, विशेषकर सुबह के समय, एकत्र करें
- ठंडे और नम घोंसलों में दरारें बढ़ जाती हैं
- अंडों को साफ, सूखे और मध्यम गर्म स्थान पर रखें
- अंडों को अचानक ठंडी हवा के संपर्क में आने से बचाएं

अंडों का सही प्रबंधन बाजार मूल्य और लाभ बढ़ाता है।

निष्कर्ष

उत्तरप्रदेश में मुर्गी पालकों के लिए सर्दी का मौसम नुकसानदेह नहीं होना चाहिए। उचित आवास, संतुलित आहार, स्वच्छ पानी, पर्याप्त रोशनी और समय पर स्वास्थ्य देखभाल से सर्दी के तनाव को प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया जा सकता है।

सरल, किफायती और वैज्ञानिक पद्धतियाँ किसानों को कठोर सर्दियों के दौरान भी मुर्गियों के स्वास्थ्य, अंडा उत्पादन और फार्म की लाभप्रदता बनाए रखने में मदद करती हैं।

सर्दियों में मुर्गी पालन कैसे करें?

सर्दियों में मुर्गी पालनः बेहतर स्वास्थ्य और उत्पादन के लिए संपूर्ण मार्गदर्शिका

श्री राकेश कुमार
ग्रोवेल एग्रोवेट प्राइवेट लिमिटेड
www.growelagrovet.com

सर्दियों में मुर्गी पालन का असर मुर्गियों के समग्र प्रदर्शन पर सीधा पड़ता है क्योंकि आसपास का तापमान तेज़ी से गिर जाता है। अंडों का कम उत्पादन, पानी का कम सेवन, प्रजनन क्षमता में कमी और चूजों के कम फूटने जैसी कुछ आम समस्याएं हैं। इसीलिए ठंड के मौसम में उचित मुर्गी प्रबंधन हर मुर्गी पालक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

सर्दियों में मुर्गी पालन से अधिकतम लाभ सुनिश्चित करने के लिए, मुर्गियों को हर प्रकार के तनाव से मुक्त रखना आवश्यक है। कठोर ठंड का मौसम तापमान, आर्द्रता, बिछावन, अमोनिया का स्तर, चारा, पानी, प्रकाश और वेंटिलेशन को प्रभावित करता है—ये सभी कारक मुर्गियों के स्वास्थ्य और प्रदर्शन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

नीचे वे मुख्य बिंदु दिए गए हैं जिनका मुर्गी पालकों को सर्दियों के दौरान विशेष ध्यान रखना चाहिए।

मुर्गीपालन गृह प्रबंधन

मुर्गीपालन गृह का डिज़ाइन इस प्रकार होना चाहिए कि ठंडे महीनों में पक्षियों को अधिकतम आराम मिले। संरचना का निर्माण हवा की दिशा और सूर्य के प्रकाश की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। सर्दियों में, चूंकि सूर्य आकाश में नीचे होता है, इसलिए पूर्व–पश्चिम दिशा में गृह बनाने से दिन भर अधिक सूर्य का प्रकाश अंदर आता है।

ठंडी हवा के प्रवेश द्वारों पर बोरी या पर्दे लगाने चाहिए। सूर्यास्त के बाद इन्हें नीचे कर देना चाहिए और अगली सुबह तक इन्हें ऐसे ही रखना चाहिए ताकि पक्षियों को ठंडी हवाओं से बचाया जा सके।

सर्दियों में उचित चूजों की देखभाल और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। हालांकि चूजों की देखभाल की विधि वही रहती है, लेकिन कम तापमान के दौरान सही तापमान और आर्द्रता बनाए रखने के लिए अधिक ईंधन, समय और प्रयास की आवश्यकता होती है।

मुर्गीपालन गृह वेंटिलेशन प्रबंधन

पक्षी अपनी सांस और मल के माध्यम से बहुत अधिक नमी छोड़ते हैं। खराब वेंटिलेशन से अमोनिया का जमाव हो सकता है, जिससे श्वसन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए, गृह के अंदर ताजी हवा का प्रवाह आवश्यक है।

स्लाइडिंग खिड़कियां दिन के दौरान हवा के प्रवाह की अनुमति देती हैं और रात में बंद की जा सकती हैं। निकास पंखे भी बासी, नम हवा को बाहर निकालने में मदद करते हैं।

चूजे के जीवन के पहले 24–48 घंटे बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। शेड में प्रवेश करने वाली ठंडी हवा भारी हो जाती है और गर्म हवा के साथ मिलने के बजाय सीधे बिछौने पर गिरती है। इससे बिछौना जल्दी खराब हो जाता है, इसलिए वेंटिलेशन और हीटिंग को बार–बार समायोजित करना आवश्यक है—कभी–कभी तो हर घंटे भी।

ठंड के मौसम में वेंटिलेशन मुश्किल होता है, लेकिन निम्नलिखित कदम उचित परिस्थितियाँ बनाए रखने में मदद करते हैं:

सर्दियों में वेंटिलेशन के मुख्य सुझाव

- शेड का उचित इन्सुलेशन और सीलिंग सुनिश्चित करें।
- गर्मी बनाए रखने के लिए पंखे न्यूनतम क्षमता पर चलाएँ, लेकिन न्यूनतम वेंटिलेशन बंद न करें।
- यदि अमोनिया की गंध या गीला बिछौना दिखाई दे तो वेंटिलेशन बढ़ाएँ।
- यदि अधिक वेंटिलेशन की आवश्यकता हो, तो पंखे की गति कम करने के बजाय आने वाली हवा में गर्मी मिलाएँ।
- यदि बिछौना बहुत अधिक सूख जाए तो वेंटिलेशन कम करें।
- पक्षियों तक पहुँचने से पहले ठंडी और गर्म हवा को मिलाने के लिए सर्कुलेशन पंखों का उपयोग करें।

अंडे देने वाली मुर्गियों के लिए प्रकाश प्रबंधन

सर्दियों के दौरान, प्राकृतिक दिन के उजाले के घंटे कम हो जाते हैं, जिससे पक्षी पंख झड़ने लगते हैं और अंडे देना बंद कर देते हैं। उत्पादन में होने वाले नुकसान से बचने के लिए, मुर्गियों को प्रतिदिन 14–16 घंटे कृत्रिम प्रकाश मिलना चाहिए।

मुर्गीपालन के लिए बिछावन प्रबंधन

चूजों को रखने से पहले, फर्श को अच्छी गुणवत्ता वाली बिछावन सामग्री (बिस्तर) से ढक देना चाहिए। बिछावन तापमान को एक समान बनाए रखने में मदद करता है, नमी को सोखता है और पक्षियों और गोबर के बीच सीधा संपर्क रोकता है।

सर्दियों के लिए 6 इंच की बिछावन की गहराई आदर्श है। ठीक से प्रबंधित बिछावन को हाथ में लेने पर गर्म महसूस होना चाहिए।

गीले बिछावन से पाइपों का रिसाव, पानी के बर्तनों का ओवरफ्लो होना, छत से टपकना और पानीयुक्त मल त्याग जैसी समस्याएं हो सकती हैं। गीले बिछावन पर पपड़ी जम जाती है, जिससे अवायवीय बैक्टीरिया और अमोनिया गैस के लिए आदर्श वातावरण बनता है।

बिछावन की गुणवत्ता के लिए महत्वपूर्ण बिंदु

- बिछावन में नमी 25–35% के बीच बनाए रखें।
- हीटिंग और वेंटिलेशन की लगातार निगरानी करें।
- पानीयुक्त मल त्याग को रोकने के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले चारे और पानी का उपयोग करें।
- पपड़ी जमने पर बिछावन को तुरंत बदल दें।
- दुर्गंध से बचने के लिए बिछावन को सूखा रखें, खासकर आवासीय क्षेत्रों के पास स्थित फार्मों में।

कम पीएच वाला सूखा कूड़ा प्राकृतिक रूप से कार्बनिक पदार्थों के अपघटन को धीमा कर देता है और दुर्गंध को रोकता है।

मुर्गीपालन आहार प्रबंधन

मुर्गीपालन दो मुख्य कार्यों के लिए आहार का उपयोग करता है:

1. शरीर का तापमान और बुनियादी शारीरिक गतिविधियों को बनाए रखना
2. शरीर के ऊतकों का निर्माण करनाकृमांस, हड्डियाँ, पंख, अंडे आदि।

सर्दियों में, पक्षी अधिक आहार खाते हैं क्योंकि कम तापमान के कारण ऊर्जा की आवश्यकता बढ़ जाती है। इसलिए, उच्च–ऊर्जा वाले आहार आवश्यक हो जाते हैं।

सर्दियों में ऊर्जा की आवश्यकता

जब पक्षी ऊर्जा के लिए अधिक आहार खाते हैं, तो वे अनावश्यक रूप से अतिरिक्त पोषक तत्व भी ग्रहण कर लेते हैं, जिससे पोषक तत्वों की बर्बादी होती है। इससे बचने के लिए, आहार में तेल या वसा जैसे उच्च–ऊर्जा वाले स्रोतों को शामिल करें और अन्य पोषक तत्वों को तदनुसार समायोजित करें।

पहले 24–48 घंटों के दौरान, चूजों को जल्दी–जल्दी खाना–पीना चाहिए। किसानों को कागज़ की शीट पर आहार फैलाना चाहिए और चूजों के लिए पीने में आसानी के लिए अतिरिक्त छोटे पानी के बर्तन उपलब्ध कराने चाहिए।

चूजों की नियमित रूप से जाँच करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनका पेट भरा हुआ, मुलायम और गोल है—यह इस बात का संकेत है कि वे ठीक से खा–पी रहे हैं।

आदर्श आहार फार्मूला

- गर्मियों के लिए आवश्यक: 23% प्रोटीन, 3100 किलो कैलोरी ME / किग्रा
- सर्दियों के लिए आवश्यक: 23% प्रोटीन, 3400 किलो कैलोरी ME / किग्रा

अमीनो एसिड का स्तर बढ़ाने से FCR, विकास दर और ब्रेस्ट मीट की पैदावार में सुधार होता है। हालांकि, उच्च प्रोटीन से पानी की खपत भी बढ़ जाती है, जिससे बिछावन गीला हो सकता है। अमीनो पावर जैसे उत्पाद पहले 20 दिनों के दौरान अमीनो एसिड संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं। उच्च कैलोरी मान वाला चारा पक्षियों को ठंड के मौसम में गर्म रखने में सहायक होता है।

मुर्गी पालन जल प्रबंधन

सर्दियों में, पक्षी स्वाभाविक रूप से कम पानी पीते हैं, लेकिन हाइड्रेशन बनाए रखना आवश्यक है।

पानी हमेशा ताजा, साफ और एक्वाक्योर जैसे उत्पादों से कीटाणुरहित होना चाहिए। यदि पानी बहुत ठंडा है, तो उसे सामान्य तापमान पर लाने के लिए उसमें गर्म पानी मिलाएं।

जमा देने वाले क्षेत्रों में, बर्फ जमने के कारण अक्सर पाइप अवरुद्ध हो जाते हैं। जब तापमान 0°C से नीचे गिर जाए, तो अवरोध को रोकने के लिए पानी की लाइनों का नियमित रूप से निरीक्षण करें।

चूंकि पक्षी सर्दियों में कम पानी पीते हैं, इसलिए कई दवाएं, टीके और तनाव–रोधी पूरक जैसे ग्रोविट पॉवर, इम्यून बूस्टर आदि पानी के माध्यम से दिए जाते हैं। पानी में दवा देने से कुछ समय पहले पानी हटा दें और कम मात्रा में दवा तैयार करें ताकि पक्षी पूरी खुराक ग्रहण कर सकें।

सर्दियों में सफल मुर्गी पालन के लिए अंतिम सुझाव

उचित जानकारी, सही सावधानियों और उच्च गुणवत्ता वाले मुर्गी पालन स्वास्थ्य उत्पादों के उपयोग से सर्दियों में मुर्गी पालन आसान और लाभदायक हो जाता है। ऊपर बताए गए प्रबंधन तरीकों का पालन करने से आपको ठंडे महीनों के दौरान पक्षियों के स्वास्थ्य को बनाए रखने, तनाव को कम करने और समग्र उत्पादन में सुधार करने में मदद मिलेगी।

भारत में मुर्गी पालन के स्वास्थ्य और उत्पादन पर शीत ऋतु का प्रभाव

प्रोफेसर (डॉ.)
आर. एन. श्रीनिवास गौड़ा

शीत ऋतु (दिसंबर–फरवरी) भारत में मुर्गी पालन के उत्पादन और स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। शीत ऋतु के कारण मुर्गियों में तनाव उत्पन्न होता है, जिससे अंडे का उत्पादन और वजन बढ़ना कम हो जाता है, चारे की दक्षता घट जाती है और एवियन इन्फ्लूएंजा और कोक्सीडियोसिस जैसी बीमारियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ जाती है।

उत्पादन और स्वास्थ्य पर प्रभाव

- **उत्पादन में कमी:** परिवेश का कम तापमान (15°C या 55°F से नीचे) शीत ऋतु के तनाव को बढ़ाता है, जिससे मुर्गियां अपने शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए अधिक ऊर्जा खर्च करती हैं, जिससे उनके विकास और अंडे के उत्पादन से संसाधन हट जाते हैं। यदि इसका प्रबंधन न किया जाए तो अक्सर अंडे के उत्पादन में 25–35% की गिरावट आ जाती है।
- **वजन में कमी:** ब्रॉयलर मुर्गियां मांसपेशियों के निर्माण के बजाय शरीर की गर्मी उत्पन्न करने के लिए अधिक चारा खाती हैं, जिसके कारण उनकी विकास दर कम हो जाती है और चारा रूपांतरण अनुपात (FCR) घट जाता है।
- **स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं:**
  - **कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली:** ठंड के तनाव से पक्षियों की प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर हो जाती है, जिससे वे संक्रमणों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।
  - **श्वसन संबंधी समस्याएं:** खराब वेंटिलेशन, जो अक्सर किसानों द्वारा गर्मी बनाए रखने के लिए शेड को पूरी तरह से सील करने के प्रयास का परिणाम होता है, अमोनिया और धूल के जमाव का कारण बनता है, जिससे श्वसन संबंधी बीमारियां होती हैं।
  - **रोग:** कुछ रोगों का प्रसार सर्दियों के दौरान बढ़ जाता है, क्योंकि कुछ रोगाणु ठंडे वातावरण में बेहतर तरीके से जीवित रहते हैं। इनमें शामिल हैं:
    - **एवियन इन्फ्लूएंजा:** इस वायरल रोग का प्रकोप सर्दियों में अधिक आम है क्योंकि वायरस ठंडे तापमान में अधिक समय तक बना रहता है।
    - **कोक्सीडियोसिस:** नम कूड़े की स्थिति, जो खराब वेंटिलेशन और नमी के जमाव का संभावित परिणाम है, इस रोग का कारण बनने वाले परजीवी के बीजाणुजनन को बढ़ावा देती है।
    - **एस्परगिलोसिस:** यह कवक रोग (ब्रूडर निमोनिया) अक्सर दूषित या नम कूड़े से जुड़ा होता है।
  - **शारीरिक परिवर्तन:** पक्षी व्यवहार में परिवर्तन प्रदर्शित करते हैं, जैसे कि गर्मी बनाए रखने के लिए एक साथ झुंड बनाना, ऊष्मायन के लिए पंखों को फड़फड़ाना और पानी का सेवन कम करना। ताजे, जमे हुए पानी की अनुपलब्धता के कारण निर्जलीकरण एक गंभीर समस्या हो सकती है।
  - **प्रजनन पर प्रभाव:** प्रजनन क्षमता और चूजों की संख्या में कमी आ सकती है, और कम प्राकृतिक प्रकाश अवधि (दिन के उजाले के घंटे) मुर्गियों के प्राकृतिक अंडे देने के चक्र को बाधित कर सकती है।

प्रबंधन रणनीतियाँ

भारत में सर्दियों के दौरान मुर्गी पालन की सुरक्षा के लिए, किसानों को मजबूत आवास प्रबंधन, पोषण संबंधी समायोजन और ठंड के तनाव का मुकाबला करने के लिए सक्रिय स्वास्थ्य उपायों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

आवास और पर्यावरण प्रबंधन

- **ऊष्मायन और हवा का प्रवाह नियंत्रण:** ठंडी हवा के प्रवाह को रोकने के लिए मुर्गीघर की दीवारों में सभी अंतराल, दरारें और खुले स्थानों को सील कर दें। शेड के खुले किनारों को ढकने के लिए बोरी या मोटे पर्दे जैसी ऊष्मारोधी सामग्री का उपयोग करें, विशेष रूप से शाम से सुबह तक।
- **तापमान नियंत्रण:** इष्टतम तापमान बनाए रखने के लिए, विशेष रूप से छोटे चूजों के लिए, पारंपरिक बुखारी, इलेक्ट्रिक हीटर या इन्फ्रारेड लैंप जैसे बाहरी ताप स्रोतों का उपयोग करें (पहले सप्ताह के लिए लगभग 33–34°C, जिसे धीरे–धीरे साप्ताहिक रूप से कम किया जा सकता है)। शेड का आयतन कम करने के लिए फॉल्स सीलिंग का उपयोग करें, जिससे इसे गर्म करना आसान और अधिक किफायती हो जाता है।
- **वेंटिलेशन और वायु गुणवत्ता:** घर को गर्म रखते हुए भी, नमी, अमोनिया और अन्य हानिकारक गैसों के जमाव को रोकने के लिए पर्याप्त वेंटिलेशन सुनिश्चित करें। वायु प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए समायोज्य पर्दों या स्लाइडिंग खिड़कियों का उपयोग करें, दिन के गर्म समय में उन्हें खोलें और सुनिश्चित करें कि बासी हवा निकलने के लिए ऊपर की ओर न्यूनतम जगह रहे।
- **बिछावन प्रबंधन:** कम से कम 6 इंच की गहराई तक चावल की भूसी, पुआल या लकड़ी के बुरादे जैसी शोषक सामग्री का उपयोग करके डीप लिटर सिस्टम का प्रयोग करें। यह ठंडी जमीन से इन्सुलेशन का काम करता है और नमी को सोखने में मदद करता है। बिछावन को नियमित रूप से पलटें या हिलाते रहें ताकि वह सूखा और हवादार रहे, जिससे कोक्सीडियोसिस जैसे रोगजनकों के विकास को रोका जा सके।
- **प्रकाश व्यवस्था:** अंडे देने वाली मुर्गियों के अंडा उत्पादन चक्र को बनाए रखने के लिए प्रतिदिन 14–16 घंटे प्रकाश प्रदान करने हेतु प्राकृतिक दिन के प्रकाश के पूरक के रूप में कृत्रिम प्रकाश की व्यवस्था करें।

चारा और जल प्रबंधन

- **उच्च ऊर्जा वाला आहार:** ठंडे मौसम में शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए पक्षियों को अधिक कैलोरी की आवश्यकता होती है, इसलिए मक्का या तेल जैसे वसायुक्त तत्व मिलाकर चारे की ऊर्जा घनत्व बढ़ाएँ। उत्पादकता बढ़ाने के लिए पर्याप्त प्रोटीन (अंडे देने वाली मुर्गियों के लिए 16–18%) प्रदान करना सुनिश्चित करें।
- **गर्म पानी:** ताज़ा, साफ पानी सामान्य या हल्का गुनगुना तापमान पर उपलब्ध कराएँ ताकि पक्षी इसे आसानी से पी सकें, क्योंकि पक्षी ठंडा पानी कम पीते हैं। पानी की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करें और अत्यधिक ठंडे क्षेत्रों में पाइपलाइनों को जमने से बचाने के लिए नियमित रूप से उनकी जाँच करें।
- **निरंतर चारा आपूर्ति:** सुनिश्चित करें कि पक्षियों को पूरे दिन चारा उपलब्ध रहे और प्रतिस्पर्धा से बचने के लिए फीडरों की संख्या बढ़ाने पर विचार करें।

स्वास्थ्य और जैव सुरक्षा

- **टीकाकरण और स्वास्थ्य जांच:** न्यूकैसल रोग जैसी आम शीतकालीन बीमारियों के खिलाफ सख्त टीकाकरण कार्यक्रम का पालन करें। कलगी और गलफड़ों पर बीमारी या पाले के निशान की नियमित जांच करें।
- **कीट और कृंतक नियंत्रण:** प्रभावी कीट नियंत्रण उपाय लागू करें, क्योंकि कृंतक अक्सर सर्दियों में मुर्गी पालन शेड में गर्म आश्रय ढूंढते हैं।
- **दवा देना:** चूंकि सर्दियों में पानी का सेवन कम हो जाता है, इसलिए दवा, टीके या तनाव–रोधी विटामिन देते समय पानी की मात्रा को समायोजित करें ताकि प्रत्येक पक्षी को पूरी खुराक मिल सके।

आपातकालीन तैयारी

- बिजली कटौती की स्थिति में हीटिंग और लाइटिंग सिस्टम के लिए एक बैकअप बिजली स्रोत (जैसे जनरेटर) तैयार रखें।
- खराब मौसम से पहले चारा, बिस्तर और हीटर के लिए ईंधन जैसी आवश्यक सामग्री का स्टॉक कर लें।

मुर्गी के पाचन तंत्र को समझना

(अवरोधक कार्य और संरचना)

डॉ. एस. के. मैनी
सलाहकार, वेस्पर ग्रुप, बेंगलुरु

आंतों का स्वास्थ्य मेजबान, आंतों के सूक्ष्मजीवों, आंतों के वातावरण, विभिन्न तनावों, आहार पोषक तत्वों और उनकी संरचना, माइकोटॉक्सिन, एंटीन्यूट्रिएंट्स और अन्य प्रतिकूल यौगिकों की उपस्थिति के बीच एक नाजुक संतुलन बनाए रखने पर बहुत अधिक निर्भर करता है। यदि यह संतुलन बिगड़ जाता है, तो पक्षी पीड़ित होते हैं, उनका विकास, स्वास्थ्य और प्रदर्शन सभी प्रभावित होते हैं।

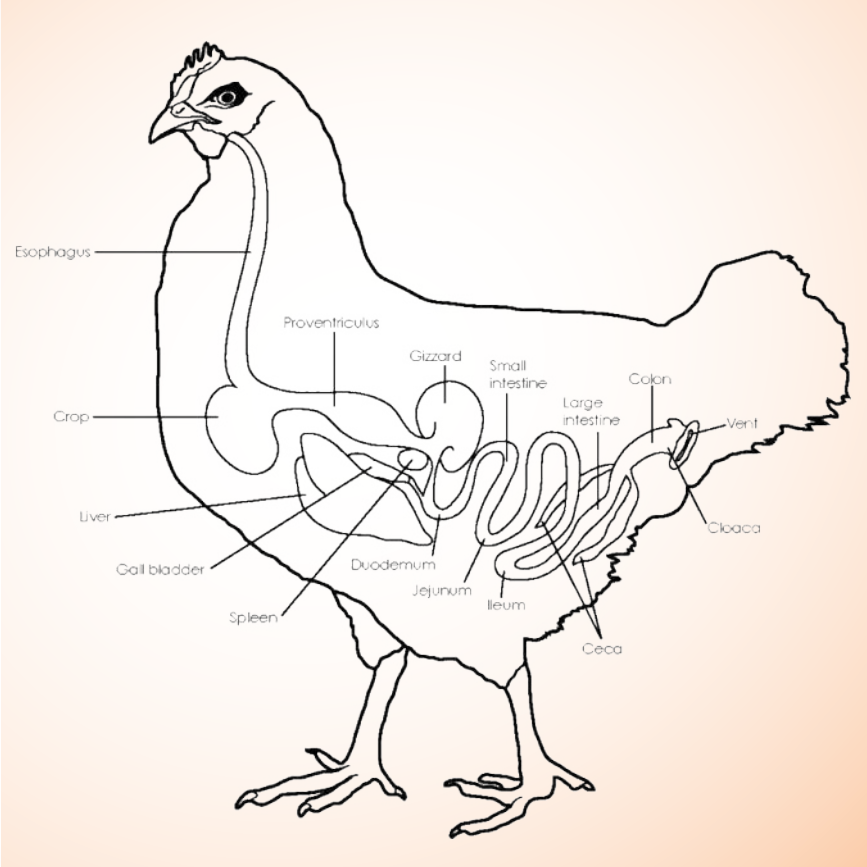

पक्षी का पाचन तंत्र एक अत्यंत विशिष्ट नली है, जो चोंच से शुरू होकर क्लोका में समाप्त होती है। मुर्गी के पाचन तंत्र का प्राथमिक कार्य खिलाए जा रहे चारे में निहित पोषक तत्वों को पचाना और अवशोषित करना है, ताकि रखरखाव, वृद्धि, विकास, उत्पादन और प्रजनन के लिए चयापचय संबंधी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। यह रोगजनकों (बैक्टीरिया, वायरस, कवक, प्रोटोजोआ आदि), जैवविषाक्त पदार्थों (माइकोटॉक्सिन, टैनिन, एंटी–न्यूट्रिएंट्स, असंगत रसायन, दवाएं आदि) के प्रवेश को रोकने के लिए एक अवरोधक का काम करता है। इसके अवरोधक कार्य के कारण, वांछनीय समस्थिति की स्थिति बनी रहती है, जो पक्षी की वृद्धि, प्रतिरक्षा, स्वास्थ्य और प्रदर्शन के लिए आवश्यक है।

अवरोधक क्रिया कैसे काम करती है

चयनात्मक पारगम्यता

आवश्यक पोषक तत्वों, पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स को गुजरने देती है जबकि हानिकारक पदार्थों को प्रतिबंधित या रोकती है।

भौतिक एवं रासायनिक सुरक्षा

श्लेष्म परत और रोगाणुरोधी पेप्टाइड हानिकारक सूक्ष्मजीवों से सुरक्षा प्रदान करते हैं।

प्रतिरक्षा निगरानी

स्थानीय प्रतिरक्षा कोशिकाएं दूषित पेयजल या चारे के माध्यम से प्रवेश करने वाले विभिन्न प्रकार के सूक्ष्मजीवों के खतरों की निगरानी करती हैं और उन पर प्रतिक्रिया करती हैं।

अन्य जानवरों की तरह, मुर्गियों का पाचन तंत्र सामान्यतः बैक्टीरिया, वायरस, प्रोटोजोआ, कवक आदि से युक्त विभिन्न सूक्ष्मजीवों को आश्रय देता है और बनाए रखता है, जो पर्यावरण, मौसम, जलवायु परिस्थितियों, विभिन्न तनावों, चारे के प्रकार, उसकी संरचना और पक्षी की उम्र के साथ बदलते रहते हैं। ये सूक्ष्मजीव पाचन, पोषक तत्वों के अवशोषण, पक्षियों की प्रतिरक्षा क्रिया और रोग प्रतिरोधक क्षमता में सहायता करते हैं, जिससे उनका समग्र प्रदर्शन अच्छा बना रहता है।

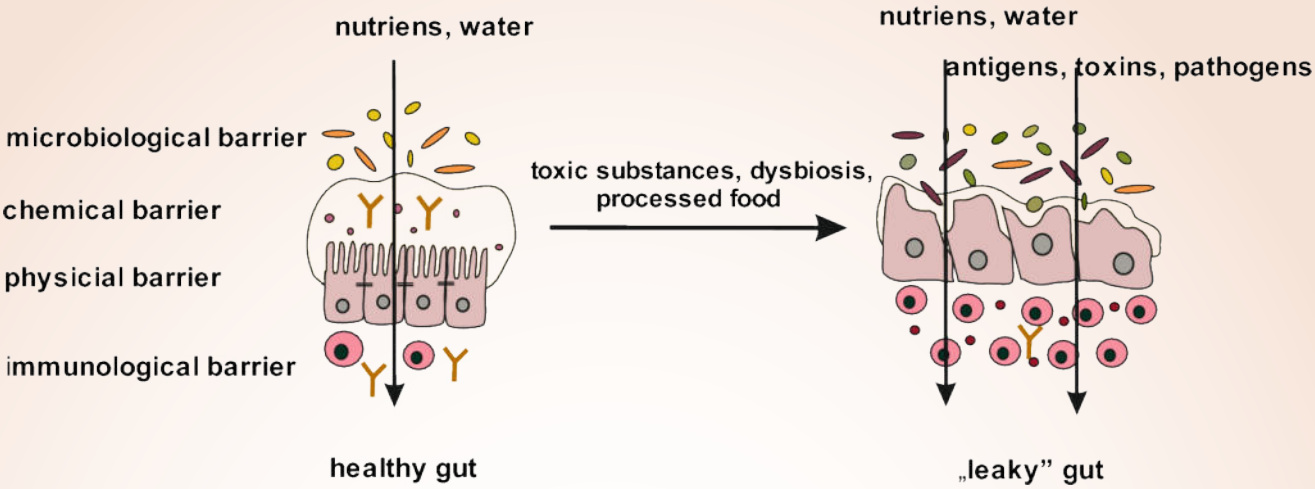

आंत्र अवरोध कार्यप्रणाली को प्रभावित करने/क्षति पहुँचाने वाले कारक

तनाव

यह एचपीए अक्ष को सक्रिय कर सकता है, जिससे अवरोध कार्यप्रणाली में खराबी आ सकती है।

आहार

अमीनो अम्ल (जैसे आर्जिनिन, ग्लूटामिन, थ्रेओनिन) और पूरक आहार (जैसे क्लोरेला वल्गारिस) अवरोध कार्यप्रणाली को सुदृढ़ बनाए रख सकते हैं, जबकि कुपोषण इसे कमजोर कर देता है।

संक्रामक कारक

रोगजनक (जैसे साल्मोनेला) और विषाक्त पदार्थ सीधे अवरोध कार्यप्रणाली को नुकसान पहुँचाते हैं।

सूक्ष्मजीव असंतुलन

सूक्ष्मजैविक असंतुलन से रोग की संवेदनशीलता बढ़ जाती है।

इस अवरोध कार्यप्रणाली को हर समय अच्छी कार्यशील स्थिति में बनाए रखना आवश्यक है, ताकि सूजन, शारीरिक क्षति न हो और आंत की अखंडता उचित रूप से बनी रहे। इससे पक्षियों की आवश्यकताओं के अनुसार पोषक तत्वों का उचित अवशोषण, उनका उपयोग और चयापचय सुनिश्चित होता है, जिससे उनकी आनुवंशिक क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन सुनिश्चित होता है।

आंतों के अवरोध में 4 परतें होती हैं – सूक्ष्मजैविक, रासायनिक, भौतिक और प्रतिरक्षात्मक। बाह्य या आंतरिक कारकों के प्रभाव से आंतों का अवरोध क्षतिग्रस्त हो जाता है, जिससे "लीकी गट" नामक घटना उत्पन्न होती है।

मुर्गी की आंत में अवरोधक कार्य एक महत्वपूर्ण रक्षा तंत्र है, जो एक चयनात्मक फिल्टर के रूप में कार्य करता है। यह अवरोधक एक एकल कोशिका परत (एपिथेलियम) का उपयोग करता है जिसमें तंग जोड़, श्लेष्मा और प्रतिरक्षा कोशिकाएं होती हैं। यह पोषक तत्वों को अवशोषित करते हुए रोगजनकों, विषाक्त पदार्थों और प्रतिजनों को रक्तप्रवाह में प्रवेश करने से रोकता है। इसकी अखंडता स्वास्थ्य और कार्यक्षमता के लिए आवश्यक है, जिसे विशेष कोशिकाओं द्वारा बनाए रखा जाता है और आहार और सूक्ष्मजीवों द्वारा प्रभावित होती है।

एपिथेलियल कोशिकाएं: कोशिकाओं की एक एकल परत प्राथमिक भौतिक अवरोध बनाती है, जो जोड़ों द्वारा जुड़ी होती है। अंतः कोशिकीय जोड़: तंग जोड़ (टीजे), आसंजक जोड़ और डेस्मोसोम कोशिकाओं के बीच के स्थानों को सील करते हैं, आवश्यक पोषक तत्वों के परकोशिकीय (कोशिकाओं के बीच) परिवहन को नियंत्रित करते हैं और अवांछित पदार्थों को आंत के लुमेन से रक्तप्रवाह में रिसाव से रोकते हैं।

श्लेष्मा परत

गोब्लेट कोशिकाओं द्वारा स्रावित, यह मोटी परत रोगाणुओं को एपिथेलियम से अलग करती है, जिसमें रोगाणुरोधी पेप्टाइड होते हैं और सूक्ष्मजीव संतुलन बनाए रखती है।

माइक्रोबायोटा

संतुलित आंत फ्लोरा प्रतिरक्षा अवरोध की अखंडता में योगदान देता है और रोगजनकों से प्रतिस्पर्धा करता है।

प्रतिरक्षित कोशिकाएं

लैमिना प्रोप्रिया में स्थित ये कोशिकाएं आक्रमणकारियों के खिलाफ प्रतिरक्षा सुरक्षा प्रदान करती हैं।

विशेषीकृत कोशिकाएं: गोब्लेट कोशिकाएं (बलगम), पैनेथ कोशिकाएं (रोगाणुरोधी), टफ्ट कोशिकाएं और आंत्र अंतःस्रावी कोशिकाएं प्रतिरक्षा अवरोध के कार्य और पोषक तत्वों के अवशोषण में सहायता करती हैं।

मुर्गी के पाचन तंत्र, प्रतिरक्षा तंत्र और उसके रखरखाव की स्पष्ट समझ इष्टतम पक्षी स्वास्थ्य, विकास, भोजन की खपत, पाचन क्षमता, दक्षता आदि के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्रतिरक्षा तंत्र में खराबी से रोग (जैसे नेक्रोटिक एंटराइटिस, कोक्सीडियोसिस), उत्पादन में कमी और समग्र प्रदर्शन में गिरावट आती है।

मुर्गीपालन में टीकाकरण का महत्व

अभिरुबा[1] और वासंथी बालन[2]
[1]तीसरे वर्ष बी.वी.एससी., [2]सहायक प्रोफेसर
पशुधन फार्म परिसर, पशु चिकित्सा महाविद्यालय एवं
अनुसंधान संस्थान तिरुनेलवेली – 627358
तमिलनाडु पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

परिचय

पोल्ट्री पालन में टीकाकरण स्वास्थ्य प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण तत्व है। ब्रॉयलर और लेयर दोनों प्रकार की मुर्गियों सहित ब्रीडर झुंड, पोल्ट्री उत्पादन की रीढ़ हैं। इनका स्वास्थ्य सीधे तौर पर प्रजनन क्षमता, चूजों की संख्या और संतान की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। इन झुंडों में खराब स्वास्थ्य से महत्वपूर्ण आर्थिक नुकसान हो सकता है।

प्रभावी टीकाकरण कार्यक्रमों का उद्देश्य दो प्रमुख लक्ष्य प्राप्त करना है:

1. यह ब्रीडर्स को महत्वपूर्ण बीमारियों से बचाता है।
2. अंडे की जर्दी में मौजूद एंटीबॉडी के माध्यम से चूजों को मातृ प्रतिरक्षा प्रदान करता है। यह दोहरा संरक्षण ब्रीडर झुंड और उनकी संतानों दोनों के स्वास्थ्य और उत्पादकता को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रजनन मुर्गी पालन में टीकाकरण क्यों महत्वपूर्ण है?

सक्रिय प्रतिरक्षा विकास: टीके पक्षी की प्रतिरक्षा प्रणाली को रोगजनक को पहचानने और रक्षा प्रतिक्रिया तैयार करने के लिए उत्तेजित करके कार्य करते हैं। टीकाकरण के बाद, प्रजनन मुर्गी में एंटीबॉडी (ह्यूमरल प्रतिरक्षा) और कोशिका–मध्यस्थ प्रतिरक्षा विकसित होती है। यह उन्हें नैदानिक रोगों से बचाता है, रोगजनक भार को कम करता है और संक्रामक एजेंटों के उत्सर्जन को कम करता है।

मातृ एंटीबॉडी स्थानांतरण: प्रजनन मुर्गी पालन का एक अनूठा लाभ चूजे में प्रतिरक्षा का स्थानांतरण है। प्रजनन मुर्गियां अंडे की जर्दी में (IgY एंटीबॉडी) जमा करती हैं, जो चूजों को अंडे से निकलने के बाद 2–3 सप्ताह तक निष्क्रिय प्रतिरक्षा प्रदान करती हैं। यह उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली के अपरिपक्व होने की प्रारंभिक अवधि के दौरान उनकी रक्षा करने में मदद करता है।

मातृ प्रतिरक्षा निम्नलिखित रोगों से सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है:

- न्यूकैसल रोग (एनडी)/रानीखेत रोग
- संक्रामक बर्सल रोग (आईबीडी)
- मारेक रोग (आंशिक)
- एवियन इन्फ्लूएंजा (एआई)
- फाउल पॉक्स (आंशिक)
- संक्रामक ब्रोंकाइटिस (आईबी)

प्रजनकों में उचित टीकाकरण के बिना, संतानें प्रारंभिक जीवन में संक्रमणों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील रहेंगी।

ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज संचरण में कमी: कुछ रोगजनक मुर्गी से अंडे में सीधे संचारित हो सकते हैं (ऊर्ध्वाधर संचरण), जैसे: साल्मोनेला पुलोरम, साल्मोनेला एंटरिटिडिस, माइकोप्लाज्मा गैलिसेप्टिकम (एमजी), माइकोप्लाज्मा साइनोविया (एमएस) आदि। टीकाकरण से संक्रमण का प्रसार काफी कम हो जाता है, उत्सर्जन घटता है और माता–पिता से चूजे में संक्रमण फैलने का खतरा कम हो जाता है।

प्रजनक मुर्गीपालन में टीकाकरण द्वारा लक्षित प्रमुख रोग

स्वस्थ प्रजनक झुंड एक मजबूत मुर्गीपालन उद्योग की नींव हैं। उनकी प्रतिरक्षा न केवल उनकी रक्षा करती है बल्कि अगली पीढ़ी के स्वास्थ्य और प्रदर्शन को भी प्रभावित करती है। यहां उन प्रमुख रोगों का संक्षिप्त विवरण

दिया गया है जिन्हें प्रजनक टीकाकरण कार्यक्रम नियंत्रित करने का लक्ष्य रखते हैं।

न्यूकैसल रोग (एनडी): सबसे विनाशकारी मुर्गीपालन वायरसों में से एक। गंभीर एनडी 70–100% मृत्यु दर, अंडा उत्पादन में भारी गिरावट और तंत्रिका संबंधी लक्षणों का कारण बन सकता है। चूजों के लिए आजीवन प्रतिरक्षा और मजबूत मातृ एंटीबॉडी सुनिश्चित करने के लिए प्रजनकों को कई जीवित, निष्क्रिय और पुनर्योजी टीके दिए जाते हैं।

संक्रामक ब्रोंकाइटिस (आईबी): एक तेजी से फैलने वाला कोरोनावायरस है जो श्वसन और प्रजनन दोनों प्रणालियों को प्रभावित करता है। इससे अंडों के छिलके कमजोर हो जाते हैं, चूजों के अंडों से बच्चे निकलने की दर कम हो जाती है और उत्पादन में गिरावट आती है। विभिन्न प्रकारों के कारण संयुक्त सीरोटाइप टीके आवश्यक हो जाते हैं।

संक्रामक बर्सा रोग (IBD/गुम्बोरो): यह रोग चूजों के बर्सा पर हमला करता है और प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर देता है। प्रजनक मुर्गियों का सही टीकाकरण उच्च मातृ एंटीबॉडी स्तर सुनिश्चित करता है, जिससे चूजों को प्रारंभिक जीवन में सुरक्षा मिलती है।

मारेक रोग: यह एक ट्यूमर पैदा करने वाला हर्पीसवायरस है। चूजों को अंडे से निकलते ही टीका लगाया जाता है, लेकिन प्रजनक मुर्गियों का टीकाकरण खेत में वायरस के भार और पर्यावरण में इसके प्रसार को कम करने में सहायक होता है।

एवियन इन्फ्लूएंजा (AI): यह एक प्रमुख वैश्विक खतरा है, जिसमें मृत्यु दर बहुत अधिक है और पशुओं में फैलने का जोखिम भी अधिक है। टीकाकरण मृत्यु को रोकता है और वायरस के प्रसार को कम करता है, जिससे फार्म और आसपास के समुदायों की सुरक्षा होती है।

फाउल पॉक्स: यह एक धीमी गति से फैलने वाला रोग है, जिससे त्वचा और श्लेष्मा पर घाव हो जाते हैं। पंखों के बीच की झिल्ली में टीकाकरण दीर्घकालिक प्रतिरक्षा प्रदान करता है, जो लंबे समय तक जीवित रहने वाले प्रजनक झुंडों के लिए महत्वपूर्ण है।

साल्मोनेला (SE और ST): टीकाकरण अंडे के संदूषण और ऊर्ध्वाधर संचरण को कम करता है, जिससे फार्म से उपभोक्ता तक खाद्य सुरक्षा में सुधार होता है।

माइकोप्लाज्मा (MG और MS): ये रोगजनक श्वसन संबंधी समस्याएं, जोड़ों की समस्याएं और अंडे गिरने का कारण बनते हैं। टीकाकरण किए गए पशुपालकों में संक्रमण के मामले कम होते हैं और वे अपनी संतानों में कम संक्रमण फैलाते हैं।

रियोवायरस (वायरल आर्थराइटिस): इससे चूजों के पैर कमजोर हो जाते हैं और उनका विकास रुक जाता है। प्रजनक टीकाकरण से माँ को आवश्यक प्रतिरक्षा मिलती है।

ईडीएस–76 (अंडा गिरने की समस्या): इसमें पतले खोल वाले, विकृत अंडे और उत्पादन में अचानक गिरावट आती है। अंडों की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए अंडे देने से पहले टीकाकरण आवश्यक है।

प्रजनक मुर्गी पालन में टीकाकरण के लाभ

प्रजनक झुंड के स्वास्थ्य की सुरक्षा: टीकाकरण प्रजनक झुंडों को स्वस्थ रखता है, जिससे मृत्यु दर, रुग्णता और तनाव कम होता है, जिसके परिणामस्वरूप अंडे का उत्पादन और शारीरिक स्थिति बेहतर होती है।

बेहतर प्रजनन क्षमता और चूजों की संख्या में वृद्धि: एनडी, आईबी, एमजी, एमएस और ईडीएस–76 जैसी बीमारियों को रोककर, टीकाकरण प्रजनन प्रणाली की रक्षा करता है और उच्च प्रजनन क्षमता, भ्रूण की व्यवहार्यता, चूजों की संख्या और चूजों की गुणवत्ता को बढ़ाता है।

उच्च गुणवत्ता वाले चूजे: टीकाकरण किए गए प्रजनकों से प्राप्त चूजों में मजबूत प्रतिरक्षा, उच्च उत्तरजीविता, बेहतर विकास और प्रारंभिक जीवन की बीमारियों के प्रति मजबूत प्रतिरोधक क्षमता होती है।

एंटीबायोटिक दवाओं का कम उपयोग: बीमारियों के कम प्रकोप का मतलब है एंटीबायोटिक दवाओं का कम उपयोग, जिससे प्रतिरोध के जोखिम कम होते हैं, उत्पाद सुरक्षित होते हैं और वैश्विक व्यापार मानकों का अनुपालन सुनिश्चित होता है।

उन्नत जैव सुरक्षा: टीकाकरण एक जैविक सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करता है, जो फार्मों के भीतर और उनके बीच रोगजनकों के प्रसार को सीमित करता है।

प्रतिरक्षा–दमनकारी रोगों से सुरक्षा: आईबीडी, मारेक रोग और रियोवायरस के टीके प्रतिरक्षा शक्ति को बनाए रखते हैं, जिससे बेहतर टीका प्रतिक्रिया और कम द्वितीयक संक्रमण सुनिष्चित होते हैं।

प्रजनकों में टीकाकरण का आर्थिक महत्व

उत्पादन हानि की रोकथाम: एनडी, एआई, आईबी और ईडीएस जैसे रोग निम्न का कारण बन सकते हैं:

- अंडे के उत्पादन में भारी गिरावट (50–80% तक)
- उच्च मृत्यु दर
- विपणन योग्य अंडों की हानि
- अंडों से चूजों की संख्या में कमी

निवेश पर बेहतर प्रतिफल (आरओआई): टीकाकरण की लागत कुल उत्पादन लागत के 2–3% से कम होती है, लेकिन यह उन नुकसानों को रोकती है जो 10–100 गुना अधिक हो सकते हैं।

झुंड की एकरूपता बनाए रखना: एकसमान स्वास्थ्य स्थिति से झुंड प्रबंधन में सुधार होता है:

- बेहतर चारा दक्षता
- मानकीकृत शारीरिक वजन वृद्धि
- पूर्वानुमानित अंडा उत्पादन चक्र

विश्वसनीय चूजा उत्पादन सुनिश्चित करना: हैचरी उपजाऊ, रोग–मुक्त अंडों की निरंतर आपूर्ति पर निर्भर करती हैं। टीकाकृत प्रजनक सुनिश्चित करते हैं:

- चूजों का निरंतर उत्पादन
- चूजों की कम मृत्यु दर
- उच्च बिक्री और ग्राहक संतुष्टि

छंटाई और प्रतिस्थापन में कमी: स्वस्थ पक्षी अधिक समय तक उत्पादक रहते हैं, जिससे कम होता है:

- प्रतिस्थापन लागत
- श्रम
- पशु चिकित्सा व्यय

आधुनिक मुर्गी पालन उद्योग में उच्च घनत्व उत्पादन, रोगजनकों का बढ़ता दबाव, पक्षियों का तीव्र आवागमन और वायरस एवं बैक्टीरिया का निरंतर विकास प्रमुख विशेषताएं हैं। आधुनिक मुर्गी पालन उद्योग की पहचान उच्च घनत्व उत्पादन, रोगजनकों के बढ़ते दबाव, पक्षियों के तीव्र आवागमन और वायरल एवं बैक्टीरियल उपभेदों के निरंतर विकास से होती है।

प्रजनक मुर्गियों के लिए टीकाकरण कार्यक्रम

टीकाकरण कार्यक्रम की योजना निम्नलिखित के आधार पर बनाई जानी चाहिए:

- स्थानीय रोग प्रसार
- मुर्गियों के झुंड का प्रकार (ब्रॉयलर प्रजनक बनाम लेयर प्रजनक)
- फार्म का जैव सुरक्षा स्तर
- टीकाकरण का इतिहास
- मातृ एंटीबॉडी प्रोफाइल

सही समय का महत्व: टीके रोगजनकों के संपर्क में आने से पहले और प्रतिरक्षा कम होने से पहले लगाए जाने चाहिए। अंडा देने से पहले टीकाकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह निम्नलिखित को प्रभावित करता है:

- अंडा उत्पादन की चरम सीमा
- मातृ एंटीबॉडी स्तर
- चूजों की प्रतिरक्षा

संतान और हैचरी प्रदर्शन पर प्रभाव

मातृ एंटीबॉडी टाइटर्स: चूजों में उच्च मातृ एंटीबॉडी स्तर–

- पहले 2–3 हफ्तों के दौरान सुरक्षा प्रदान करते हैं
- प्रारंभिक चूजों की मृत्यु दर को कम करते हैं
- प्रारंभिक विकास प्रदर्शन में सुधार करते हैं

चूजों की प्रारंभिक मृत्यु दर में कमी: आईबीडी और एनडी जैसी बीमारियाँ चूजों में प्रारंभिक मृत्यु का कारण बनती हैं। प्रजनक मुर्गियों में टीकाकरण इसे रोकता है।

ऊर्ध्वाधर संचरण की रोकथाम: टीकाकरण की गई प्रजनक मुर्गियों में संक्रमण का स्तर कम होता है और संतानों में रोगजनकों के संचरण की संभावना कम हो जाती है।

चूजों में टीकाकरण के प्रति बेहतर प्रतिक्रिया: अच्छी मातृ प्रतिरक्षा वाले चूजे स्वयं के टीकाकरण के प्रति अधिक मजबूत प्रतिक्रिया देते हैं।

टीकाकरण कार्यक्रमों में चुनौतियाँ

टीके की विफलताएँ: अनुचित भंडारण, खराब प्रशासन तकनीक, गलत समय और टीकाकरण के दौरान तनाव के कारण समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

भिन्न प्रकार के वायरस: आईबी जैसी बीमारियों के लिए तेजी से विकसित हो रहे वायरस के कारण अद्यतन या संयोजन टीकों की आवश्यकता होती है।

मातृ एंटीबॉडी हस्तक्षेप: उच्च मातृ एंटीबॉडी चूजों में प्रारंभिक टीकों को बेअसर कर सकती हैं; टीकाकरण के समय को अनुकूलित किया जाना चाहिए।

कुशल श्रम आवश्यकता: सही खुराक देने और संभालने के लिए प्रशिक्षित कार्यबल आवश्यक है।

कोल्ड चेन रखरखाव: टीकों की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए उन्हें सही तापमान पर संग्रहित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रजनक मुर्गीपालन में टीकाकरण अत्यावश्यक है। रोग निवारण के आधार के रूप में, टीकाकरण प्रजनक मुर्गियों के झुंड के स्वास्थ्य, उत्पादकता और दीर्घायु को सुनिश्चित करता है, साथ ही मातृ प्रतिरक्षा के माध्यम से चूजों की अगली पीढ़ी की रक्षा भी करता है। आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण रोगों को नियंत्रित करके, टीकाकरण प्रजनन क्षमता, चूजों की अंडों से बच्चे निकलने की दर, चूजों की गुणवत्ता, अंडा उत्पादन और झुंड के समग्र प्रदर्शन को बढ़ाता है। यह एंटीबायोटिक दवाओं की आवश्यकता को भी कम करता है, सार्वजनिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है और जैव सुरक्षा को मजबूत करता है।

SUBSCRIPTION ORDER FORM

To,
The Circulation Manager
POULTRY PUNCH PUBLICATIONS(I) PVT. LTD.
25, Thyag Raj Nagar Market, New Delhi - 110 003

Dear Sir,

I/We wish to subscribe to Poultry Punch/Poultry Flame for One Year/Three Years/Five Years

from ..... to .....

I/We have sent you the subscription amount of Rs. .....

by DD / No. ..... dated ..... drawn .....

on ..... Bank ..... Branch .....

Send DD favouring POULTRY PUNCH PUBLICATIONS (I) PVT.

PERSONAL INFORMATION

Name ..... Address .....

.....

SUBSCRIPTION CHARGES

	Poultry Punch (English Monthly)	Poultry Manch (Hindi Monthly)
One Year	Rs. 1000.00/-	Rs. 500.00/-
Three Years	Rs. 2500.00/-	Rs. 1200.00/-
Five Years	Rs. 4000.00/-	Rs. 2000.00/-

विज्ञापन सूचकांक

- एबीटीएल 11
- एडेलबर्ट वेगीस्ज़ेरेक 4
- अमान्त्रो एग्रो.....7
- एवियाजेन.....24–25
- बायोकेम (Biochem) 15
- धूमल (Dhumal) 19
- हेलो प्रोटीन ..... प्रथम कवर
- हुवेफार्मा 17
- लुबिंग इंडिया..... तृतीय कवर
- पोलारिस ..... द्वितीय कवर
- प्रोमोइस इंटरनेशनल 6
- सुप्रीम इक्विपमेंट..... अंतिम कवर
- स्विस केमी 9
- वेंट्री बायोलॉजिकल्स (VIPx) 27

CONVEYOR SYSTEM

For Egg Transportation

The conveyor system is of crucial importance for egg farms of all sizes.

- Maximum operational salety and minimum maintenance.
- A unique construction system with clernents designed to cope with any imaginable spot requirement (all kinds of curves, heights and distances can beachieved
- Conveyor chain widths. between 200 and 750 mm.
- Capacities From 15.000 to Over 65.000 eggs per hour

WATERING SYSTEM

For Chicks & layers In Cages

LUBING nipple system offers you the following advantages

- A simple, reliable water supply.
- Coristantly fresh and cleandrinking water.
- Nearly no maintenance or cleaning.
- Improved rearing results .
- Trouble free rearing of all birds.
- The combination of nipple and drip cup ensures dry manure.

TOP CLIMATE SYSTEM

The LUBING, Top-Carnate-System is developed for effective humidifying cooling and dust binding of of the house ait, it worles according to the principle of the direct evaporative cooling.

The advantages at a glance

- Fast cooling in the house without any wetness
- Effective dust binding influences positively the breath organs of animals
- Better feed conversion.
- Regular spread of temperature.
- To spray in medicated water (For prevention of respiratory diseases).

+91 7387007677
+91 9112220380
sales@lubingindia.com
sales1@lubingindia.com
www.lubingindia.com

PRINTING DATE: 12th February 2026
DL (S)–17/3486/2024–26
RNI No.: DELBIL/2015/60127
Rs. 50 Per Copy
Month, February 2026
15th & 16th Every Month

CRAFTING Hi-QUALITY POULTRY EQUIPMENTS

SUPREME
EQUIPMENTS
POWERED WITH PASSION

FINEST **QUALITY**

ELABORATE **PRODUCT RANGE**

MANUFACTURING **EXCELLENCE**

CONTINUOUS **INNOVATION**

RELENTLESS **SERVICE**

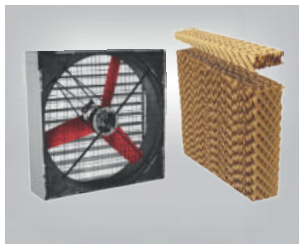

Broiler Breeder Layer

MFR. OF POULTRY CAGES, EQUIPMENTS,
PEB STRUCTURES & EC SYSTEMS

SUPREME EQUIPMENTS PVT. LTD
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Factory : C-13, NICE, MIDC, Satpur, Nashik - 422007, India
+91 253 - 2355561/62/63 Mob : +91 9420695066
info@supremeequipments.com www.supremeequipments.com

Edited, Printed, Published & Owned by: Amit Rana, 25, Thyagraj Nagar Market, New Delhi-110003
and Printed at Ankita Communications, A-1, DDA Shed, Okhla Ind. Area Ph-II, New Delhi - 110020